साईं सृजन पटल

Website : www.sainsrijanpatal.com

मासिक ई-पत्रिका

द्विवार्षिक विशेषांक

MSME Registration No.
UDYAM-UK-05-0103926

लेखन और सृजन के उन्नयन के लिए सदैव प्रतिबद्ध

वर्ष-3 | अंक-24 | जुलाई - 2026 | पृष्ठ-32 | निःशुल्क

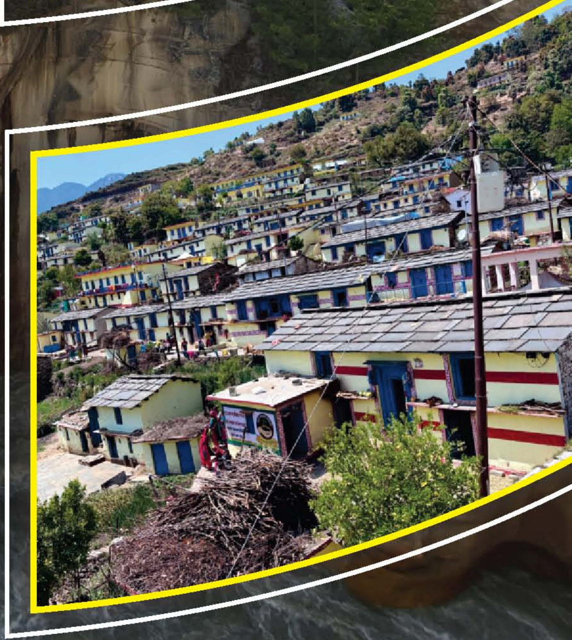

पुष्कर सिंह धामी

मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड सचिवालय
देहरादून : 248001
फोन : 0135-2650433
0135-2716262
फैक्स : 0135-2712827
कैम्प कार्यालय
फोन : 0135-2750033
0135-2750344
फैक्स : 0135-2752144

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि 'साईं सृजन पटल', सांई कुटीर, आर०के० पुरम, जोगीवाला, देहरादून द्वारा अपनी मासिक पत्रिका 'साईं सृजन पटल' (द्विवार्षिक विशेषांक) के 24वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। किसी भी समाज की सांस्कृतिक चेतना, उसके साहित्य, लोक परम्पराओं और सृजनात्मक अभिव्यक्तियों में प्रतिबिम्बित होती है। साहित्य केवल विचारों का संप्रेषण ही नहीं करता, बल्कि समाज को दिशा देने, मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करने तथा नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य भी करता है। ऐसे समय में जब तकनीकी परिवर्तन तीव्र गति से हो रहे हैं, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पत्रिकाओं की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। वे समाज के विविध पक्षों को अभिव्यक्ति प्रदान करते हुए ज्ञान, संवेदना और रचनात्मकता का सशक्त मंच उपलब्ध कराती हैं। मुझे आशा है कि इस पत्रिका में उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति, लोकभाषाओं, लोककलाओं एवं सामाजिक मूल्यों के संरक्षण और संवर्धन की दिशा में सरकार द्वारा किये गये कार्यों का समावेश होने से निःसंदेह यह पत्रिका पाठकों के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। राज्य सरकार भी प्रदेश के सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध है। देवभूमि उत्तराखण्ड की गौरवशाली परम्पराओं, लोक धरोहरों एवं महान विभूतियों के विचारों को नई पीढ़ी तक पहुँचाना हम सभी का सामूहिक दायित्व है। मुझे यह भी आशा है कि यह द्विवार्षिक विशेषांक अपने उत्कृष्ट लेखों, विचारोत्तेजक सामग्री एवं प्रेरणादायी विषय-वस्तु के माध्यम से पाठकों के ज्ञानवर्धन के साथ-साथ उन्हें समाज और राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों के प्रति भी जागरूक करेगा।

मेरी ओर से साईं सृजन पटल, साईं कुटीर, आर.के. पुरम, जोगीवाला, देहरादून को अपनी मासिक पत्रिका 'साईं सृजन पटल' (द्विवार्षिक विशेषांक) के 24वें अंक के सफल प्रकाशन के लिए समस्त सम्मानित सम्पादक एवं मा० सदस्यों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें।

पुष्कर सिंह धामी

संपादकीय

'साईं सृजन पटल' पत्रिका का द्विवार्षिक विशेषांक (24 वां अंक) सुधी पाठकों के सम्मुख रखते हुए अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।विद्वान सहयोगी लेखकों,कर्मठ संपादकीय टीम और आत्मीय पाठकों के बल पर ही दो वर्ष की यह निरंतर यात्रा पूर्ण हो पाई है। पटल इसके लिए हृदय से कृतज्ञता प्रकट करता है। पत्रिका के इस अंक में धार्मिक आस्था से जुड़े देवराणा मेला,कोटेश्वर महादेव और युल्ला कांडा पर लेख सम्मिलित हैं। ज्ञानवर्धक लेखों की श्रेणी में बारहनाजा,सारकोट ग्राम, जागरी,एनईपी 2020,तंबाकू के खतरे,एम्स ऋषिकेश की उपलब्धियां,स्वैच्छिक रक्तदान शिविर, स्टोन पेंटिंग और ईट राइट हैकॉथान पर विशेष सामग्री संकलित है। उत्तराखंडी सिनेमा के क्षेत्र 'एक बहता जीवन हरिद्वार में', 'सिल्क्यारा (टनल)41' और 'दिस ट्री वोंट फॉल' से भी पाठकों को परिचित कराया गया है। उत्तराखण्ड की 'ढोली' को राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिलता गर्व का विषय है। गढ़वाली फिल्म अभिनेता बृजमोहन वेदवाल की 44 वर्षों की अभिनय यात्रा से संबंधित विशेष साक्षात्कार भी इस अंक हिस्सा है। गुरुग्रंथ साहिब का संस्कृत पद्यानुवाद, क्लाइम्बिंग गाइड्स, आखर ऐप, करिअर गाईडेंस,पुस्तक समीक्षा, रंवाई रसोई व लाइफटाइम एचीवमेंट अवार्ड पर भी सामग्री उपलब्ध है। प्रदेश के मुख्यमंत्री जी के शुभकामना संदेश से 'सांई सृजन पटल' परिवार को एक नई ऊर्जा प्राप्त हुई है।

प्रो. (डॉ.) के. एल. तलवाड़

साईं सृजन पटल
मासिक ई-पत्रिका

संपादक/स्वामी/प्रकाशक

प्रो.के.एल.तलवाड़
(सेवानिवृत्त प्राचार्य)
मो. 9412142822
ई-मेलः sainsrijanpatal@gmail.com
वेबसाईट - sainsrijanpatal.com

उप संपादक

अंकित तिवारी
एम.ए., एल.एल.बी.
मो. 7678117638

सह संपादक

अमन तलवाड़
मो. 7300883189

द्वारा ईजी ग्राफिक्स,
दया पैलेस, हरिद्वार रोड,देहरादून (उत्तराखंड)
से मुद्रित करवाकर 'साईं कुटीर'
आर.के.पुरम, जोगीवाला, देहरादून
(उत्तराखंड) से प्रकाशित

सलाहकार मंडल

डॉ.एस.डी. जोशी, वरिष्ठ फिजिशियन
प्रो. जानकी पंवार (सेवानिवृत्त प्राचार्य)
प्रो. राजेश कुमार उभान (सेवानिवृत्त प्राचार्य)
डॉ० अनूप वीरेन्द्र कठैत (लेखक/अभिनेता)
डॉ. चन्द्रभूषण बिजल्वाण, साहित्यकार
वैष्णवी लोहनी, मॉडल/अभिनेत्री

आवरण पृष्ठ

पृष्ठभूमि में सूर्यकुण्ड गंगोत्री, इन्सेट में - लोक भवन में गुरुग्रंथ साहिब का संस्कृत पद्यानुवाद विमोचन, मिस यूनिवर्स उत्तराखंड अनुभा वशिष्ठ को सम्मानित करते सीएम, चित्रकार अजय कुमार की पेंटिंग और सीएम द्वारा गोद लिया गांव सारकोट

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में तथ्यों संबंधी विचार लेखकों के निजी हैं, जिनसे प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

आस्था

रुद्रप्रयाग में अलकनंदा तट पर स्थित
कोटेश्वर महादेव मंदिर

उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जनपद में भगवान शिव का एक अनोखा मंदिर है, जो अलकनंदा नदी के तट पर बसा है। ये बेहद खूबसूरत मंदिर श्रद्धालुओं और पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। कोटेश्वर महादेव के नाम से विख्यात इस मंदिर का इतिहास बेहद प्राचीन और पौराणिक है। यह स्थान महाभारत काल से जुड़ा हुआ है और स्कंद पुराण के केदार खंड मे भी इसका वर्णन मिलता है। कोटेश्वर महादेव जनपद मुख्यालय रुद्रप्रयाग से तीन किलोमीटर चोपड़ा मोटर मार्ग पर अलकनंदा नदी तट पर स्थित है। यहां भगवान शिव कण– कण में विराजमान हैं। यहां हजारों की संख्या में भक्त सावन माह में दर्शनों को आते हैं और महारूद्राभिषेक एवं पूजन करते हैं। सावन एवं महाशिवरात्रि पर संतानहीन दंपति भी यहां विशेष अनुष्ठान करते हैं तथा उनकी मनोकामना पूरी भी होती है।

मंदिर का इतिहास

कोटेश्वर महादेव मंदिर हिंदुओं की धार्मिक आस्था से जुड़ा प्राचीन मंदिर है। कोटेश्वर महादेव मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। मंदिर का निर्माण 14 वीं शताब्दी में किया गया था, इसके बाद 16 वीं और 17 वीं शताब्दी में मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया था।

- कोटेश्वर महादेव मंदिर प्राकृतिक चूना पत्थर से निर्मित एक गुफा रूप में है। मान्यता है कि इस गुफा में असंख्य प्राकृतिक शिवलिंग मौजूद हैं।
- गुफा की छत से पानी की बूदें लगातार शिवलिंग पर टपकती रहती हैं, जिससे प्राकृतिक रूप से जलाभिषेक होता रहता है।

पौराणिक मान्यताएं एवं इतिहास

- **राक्षसों का उद्धार :** पौराणिक कथाओं के अनुसार, प्राचीन काल में एक करोड़ राक्षसों ने अपने उद्धार के लिए भगवान शिव की तपस्या की थी। प्रसन्न होकर शिवजी ने उन्हें मुक्ति का वरदान दिया और इस गुफा में 'कोटेश्वर महादेव' के रूप में विराजमान हुए।
- **पाडंव काल :** माना जाता है कि महाभारत युद्ध के बाद जब पाडंव अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिए भगवान शिव की खोज में हिमालय गए, तो शिवजी ने उनसे छिपने के लिए इसी गुफा में शरण ली थी। मान्यता यह भी है कि स्वयं भगवान शिव केदारनाथ प्रस्थान करने से पहले इसी गुफा में ध्यान और साधना में लीन रहे थे। भस्मासुर से बचने के लिए भगवान शिव द्वारा इस गुफा की शरण लेने की कथा भी प्रचलित है। इसके अलावा, माना जाता है कि पांडवों ने भी अज्ञातवास के दौरान इस गुफा में भगवान शिव की आराधना की थी। कोटेश्वर मंदिर में स्थित गुफा में जहां भगवान स्वयं शिवलिंग में विराजमान हैं, इस गुफा मन्दिर में भक्तजन वर्षभर दर्शनों को पहुंचते हैं। सावन एवं माघ महीने में इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। इसके अलावा यहां पर पार्वती,गणेश, हनुमान और शनिदेव के मंदिर भी हैं। कोटेश्वर महादेव मंदिर के महंत शिवानंद गिरि के अनुसार इस मंदिर के कपाट भक्तों के लिए वर्ष भर खुले रहते हैं।

सावन माह में अत्यधिक भीड़ होने के कारण मंदिर समिति द्वारा कई सुविधाएं मुहैया कराई जाती हैं, ताकि भक्तों को कोई परेशानी न उठानी पड़े। यह स्थान सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। मंदिर तक पहुंचने के लिए मुख्य सड़क से उतरकर कुछ सीढ़ियों के जरिए अलकनंदा नदी के किनारे स्थित गुफा तक जाना पड़ता है।

प्रस्तुति : डॉ. रमेश चन्द्र भट्ट
असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्णप्रयाग

जागरी विरासत के वाहक - कलम दास भरतवाण

उत्तराखण्ड हिमालयी पुरातन रोगोपचार परम्परा में जहाँ आयुर्वेद में गढ़वाल के वैद्यों की अहम भूमिका रही वहीं तंत्रशास्त्रों की भी मौलिकताएं रही हैं। देवभूमि में देव दोषों के निवाणार्थ जागरों की ऐतिहासिकता रही है। जागर उत्तराखण्ड हिमालयी संस्कृति की प्राचीन विधा है। जो देव दोषों से छुटकारा पाने की एक विधा है। प्रागैतिहासिक काल में यह क्षेत्र यक्ष, कोल, किरात, भिल्ल, तंगण, नाग जातियों का रहा है। इन्होंने ही तंत्र–मंत्र, रखवाली, झाड़–फूँक, वृक्ष पूजा एवं देवता अवतारने एवं प्रसन्न करने हेतु आपस में बैठकर जागरों की रचना की, तब से ही यह मौखिक परम्परा के रूप में सतत रूप में जीवंत है। जागरों के सम्बन्ध में जागर सम्राट पद्मश्री डॉ.प्रीतम भरतवाण का मानना है कि 'अवचेतन शरीर से चेतना जागृत करके प्राणी को निरोग बनाए रखना तथा देवी देवताओं की धुँयाल करके जीवन पर्यन्त उनका आशीर्वाद बनाए रखने की विधा जागरों में निहित होती है'। स्वाभाविक है जागरों की जब बात होगी तो भरतवाण वंश की जागरीय विरासत को अवश्य संदर्भित किया जायेगा।

सन् 2010 में शोध भ्रमण के साक्षात्कार में मेरी मुलाकात भरतवाण वंशावली के वृद्ध पीढ़ी के आखिरी जागरी के रूप में कलम दास भरतवाण जी से हुई जो तब अपनी सत्तर वर्षीय आयु में भी पूर्ण स्वस्थता के साथ पारम्परिक धरोहर से लोकमानस को आधि–व्याधियों से रोग मुक्त करने में अपनी प्राकृतिक विधा से खुशहाली प्रदान कर रहे थे। उन्होंने बताया कि पहाड़ों में देवी–देवताओं के प्रति अटूट विश्वास एवं गहरी लोक–आस्था है, किंतु विकास की दौड़– भाग में प्रायः लोग अपने कुल देवता/इष्ट को पूजना भूल जाते हैं फलस्वरूप देव दोष के कारण लोगों को याद आती है, जिस कारण मुझसे घड़ियालू (घण्डियाला/ जागर/ मण्डाण) देव स्तुति परम्परा में दैविक शक्तियों की पूजा अर्चना करवाकर पारिवारिक खुशहाली में इष्ट देवताओं का आशीष परिजनों को प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त ऐड़ी–आछरी, भूत–प्रेत, छ्ल–छाया हाक टोक, नजर से भी हिमालयी लोकमानस व्यथित रहता है। जब मैंने कलम भरतवाण जी से उनकी जागरी विरासत की ऐतिहासिकता पर प्रश्न पूछे तो उन्होंनें पारिवारिक पूर्वजों की विरासत में सर्वप्रथम भादू भरतवाण का नामोल्लेख करते हुए कहा कि वे रोगोपचार की मांत्रिक परम्परा में इतने दक्ष थे कि उनके नाम की मंत्रों में 'आण' (दुहाई) दी जाती थी. जो इस प्रकार से है –

- चुंच्या बैलवाल की आण पड़े।
- लालमणि उनियाल की आण पड़े।
- भादू भरतवाण की आण पड़े।
- मरकण्डा बड़वाल की आण पड़े।

अर्थात विरासतीय ऐतिहासिकता पूर्व से ही बहुत सुदृढ़ रही है। यही कारण विरासतीय घराने की ऐतिहासिकता को जागर सम्राट पद्मश्री प्रीतम भरतवाण ने वैश्विक मंच भी प्रदान कर दिया। कलम दास भरतवाण जी वंशावली की समृद्ध जागरी परम्परा के वाहकों का उल्लेख इस प्रकार बताया– वंशावली के जागरियों का जन्म स्थान ग्राम–सिल्ला भट्टबेड़ी में जिसे 'गावली का सिल्ला' भी कहा जाता है। यह सुवाखोली, बुरासखण्डा से सटा देहरादून जनपद का क्षेत्र है जो टिहरी जनपद की सीमा की निकटता में भी है। यह गाँव प्राचीन समय से ही अपनी ऐतिहासिकता हेतु प्रसिद्ध रहा है। ऐसा माना जाता है कि आज से लगभग 800 वर्ष पूर्व कुमाऊँ से निगाटा वंश के लोग इस गाँव में आकर बसे थे इनके साथ उस समय गोरिल देवता (जो मूलतः कुमाऊँ का माना जाता है एवं न्यायिक देवता की पौराणिक मान्यता है) भी इस गाँव में आया फलस्वरूप भरतवाण वंश भी कुमाऊँ से आया हुआ माना जाता है। जिस कारण इन्हें मूलतः गोरिल देवता के जागरी की मान्यता प्राप्त है। यह बड़े गौरव की बात है कि विरासत की इस परम्परा को भरतवाण वंश के जागरी आज भी संजोए हुए हैं। गोरिल देवता के अलावा नरसिंग देवता, निरंकार, हुणिया देवता, नाग देवता तथा ऐड़ी आछरी मांतरी, भूत प्रेत, हंत्या, छ्ल–छाया, आदि अलौकिक शक्तियों के भी प्रकाण्ड जागरी रहे हैं। गाँव के इष्ट देवता भरत महाराज के जागरी के साथ– साथ गढ़वाल में पारम्परिक लोक गीत, पंवाड़ों के मर्मज्ञ भी रहे हैं। मंत्रों में भादू भरतवाण की 'आण' से स्पष्ट होता है कि लोक में ख्याति प्राप्त प्रसिद्ध जागरी थे। स्व.पत्ता भरतवाण का उल्लेख भी विद्वान जागरियों में मिलता है, इनके भाई रूप भरतवाण, मोलू भरतवाण भी विरासतीय स्तम्भ थे। इसके बाद की पीढ़ी में स्व. गेन्द्री भरतवाण तथा इनके चचेरे भाई देभू भरतवाण भी लोक मानस में लोक प्रिय रहे हैं। पारिवारिक परम्परा में स्व. गेन्द्री भरतवाण के तीन पुत्रों ने इस परम्परा का निवर्हन

विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में पद्मश्री जागर सम्राट प्रीतम भरतवाण सिनसिनाटी यूनिवर्सिटी, अमेरिका में प्रो० स्टीफन फ्यूल एवं विद्यार्थियों के साथ जागर गायन करते हुए।

आत्मीयता एवं लोक कल्याण की भावना से किया एवं अपनी वंशावली की ख्याति को उत्तराखण्ड के कुमाऊँ एवं गढ़वाल के व्यापक क्षेत्रों में लोकमानस को व्याधियों से छुटकारा दिलाते रहे। लोक में तीनों भाइयों ने जिनमें बड़े भाई स्व.हेमदास भरतवाण जी, स्व.अब्बलदास भरतवाण एवं वर्तमान में इस धरोहर को संभाले एवं संरक्षित किए हुए कलम दास भरतवाण जी ने बचपन से ही अपने पिता के साथ मिलकर पारम्परिक गूढ़ ज्ञान को प्राप्त किया एवं मानवीय स्वरूप में लोक मानस की सेवा परोपकार की भावना से करते हुए आज भी थकान महसूस नहीं करते हैं। वे कहते हैं कि लोग मेरे हाथों को जस्याऊ (शुभ) मानते हैं एवं मुझ पर अटूट भरोसा रखते हैं। भरतवाण वंश की जागरी परम्परा के वृद्ध पीढ़ी के कलम भरतवाण जी निसंदेह आखिरी जागरी थे। जनवरी, 2025 में जागरी विरासत के विद्वत स्तम्भ लोक धरोहर के रूप में छोड़कर अलविदा कह गए। पद्मश्री डॉ.प्रीतम भरतवाण जी से जब इस धरोहर के बारे में मैंने पूछा तो उन्होंने सर्वप्रथम पिताजी स्व. हेम दास भरतवाण, नाना जी एवं चाचा जी कलमू भरतवाण का उल्लेख करते हुए बताया कि मेरे पूर्वजों एवं मेरे पूजनीय पिताजी बहुत सिद्धहस्थ जागरी थे अपनी धौंसी एवं कांसी की थाली की थाप पर उन्होंने मरणासन्न असाध्य रोगियों को उपचारित किया जो जीवन की हताशा में उम्मीद छोड़ चुके थे। बालपन को याद करते हुए बताया कि पिताजी के साथ छः वर्षीय आयु से मैं काँसी की थाली बजाता था एवं जागर में भौंण (तान अथवा स्वर) देता था इन्होंने बताया कि गीतकार एवं जागर सम्राट के रूप में मुझे जो ख्याति प्राप्त है यह इसी विरासत का आशीर्वाद है।

रोगोपचार एवं देव दोष निवारण की मांत्रिक विधाओं का ज्ञान मुझे भी है अर्थात जब भी घर गाँव में जाता हूँ स्वयं ही अनुष्ठानिक पूजा पाठ करता हूँ। यह हमारे पूर्वजों की धरोहर है जिस पर हमें बड़ा स्वाभिमानी गौरव है अर्थात भावी पीढ़ियों हेतु संरक्षित रखने के लिए हम सब परिजन संकल्पबद्ध है। यह कैसे हो सकता जिस विरासत ने मुझे वैश्विक समृद्धि दी हो? उसे भूलना कदापि न्याय संगत नहीं होगा।

प्रस्तुति - डॉ.पवन कुदवान
असिस्टेंट प्रोफेसर इतिहास
राजकीय महाविद्यालय चकराता, देहरादून

प्रतिभा

मिस यूनिवर्स उत्तराखंड अनुभा वशिष्ठ को मुख्यमंत्री ने किया सम्मानित

मिस यूनिवर्स प्रतियोगिता की विजेता अनुभा वशिष्ठ को मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने 12 जुलाई को उनकी उपलब्धि और राज्य का गौरव बढ़ाने के लिए सम्मानित किया। अनुभा ने बताया कि उन्होंने पहली बार वर्ष 2024 में मिस यूनिवर्स इंडिया में भाग लिया था,जहां वे टॉप 20 फाइनलिस्ट में शामिल हुई थीं। अनुभव और समर्पण के साथ लौटते हुए उन्होंने मिस यूनिवर्स उत्तराखंड 2026 का खिताब अपने नाम किया और अपने राज्य का राष्ट्रीय मंच पर प्रतिनिधित्व करने का अवसर प्राप्त किया। अनुभा ने कहा कि उनका उद्देश्य केवल ताज जीतने तक सीमित नहीं है। वह उत्तराखंड की समृद्ध विरासत, संस्कृति और मूल्यों को राष्ट्रीय मंच और भविष्य में अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी गर्व के साथ प्रस्तुत करना चाहती हैं। मूल रूप से रुद्रप्रयाग के मयकोटी गांव निवासी प्रो. यतीश वशिष्ठ की पुत्री अनुभा वशिष्ठ मॉडल और पेशेवर मेकअप एजुकेटर हैं।

प्रस्तुति : श्रीमती नीलम तलवाड़

सराहनीय

मुख्यमंत्री के गोद लिए गांव सारकोट में बदलाव की किरण

21 वर्षीय प्रधान के नेतृत्व में विकास की नई उड़ान

उत्तराखण्ड के पर्वतीय गाँव आज पलायन, सीमित संसाधनों, बेरोजगारी और आधारभूत सुविधाओं की कमी जैसी अनेक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। इन परिस्थितियों में यदि कोई गाँव अपनी नई सोच, जन भागीदारी और युवा नेतृत्व के बल पर विकास की नई मिसाल प्रस्तुत करे तो वह पूरे राज्य के लिए प्रेरणा बन जाता है। ग्रीष्मकालीन राजधानी गैरसैंण (चमोली) में विधानसभा भवन भराड़ीसैंण परिसर के निकट स्थित सारकोट गाँव ऐसी ही प्रेरक कहानी का साक्षी है। यह गाँव आज केवल अपनी प्राकृतिक सुंदरता के कारण नहीं, बल्कि युवा नेतृत्व, सुशासन और विकास के नवाचारों के साथ-साथ मुख्यमंत्री द्वारा गोद लेने के कारण भी प्रदेशभर में चर्चा का विषय बना हुआ है।

सारकोट की इस नई पहचान के केंद्र में हैं 21 वर्षीय युवा ग्राम प्रधान प्रियंका नेगी। कम आयु में ग्राम पंचायत का नेतृत्व संभालते हुए उन्होंने यह सिद्ध किया है कि विकास के लिए केवल अनुभव ही नहीं, बल्कि दूरदृष्टि, प्रतिबद्धता और जनसेवा का सच्चा संकल्प भी आवश्यक है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा सारकोट को गोद लिए जाने के बाद गाँव में विकास कार्यों को नई गति मिली है। स्मार्ट क्लास, सड़क निर्माण, स्ट्रीट लाइट, फेंसिंग तथा अन्य आधारभूत सुविधाओं के विस्तार ने सारकोट को ग्रामीण विकास के एक उभरते मॉडल के रूप में स्थापित किया है। युवा ऊर्जा, महिला सशक्तिकरण और ग्राम स्वराज की भावना का जीवंत उदाहरण बनी प्रियंका नेगी आज उत्तराखण्ड की नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। प्रस्तुत साक्षात्कार में उन्होंने अपने राजनीतिक सफर, ग्राम विकास की प्राथमिकताओं, चुनावी अनुभवों, महिलाओं की भागीदारी, पलायन, रोजगार तथा गैरसैंण क्षेत्र के भविष्य को लेकर अपने विचार साझा किए हैं। प्रियंका नेगी बताती हैं कि ग्राम प्रधान बनने की प्रेरणा उन्हें अपने परिवार, विशेषकर अपने पिता श्री राजे सिंह नेगी और गाँव के युवा साथियों से मिली।

उनके पिता पूर्व में भी ग्राम प्रधान रह चुके हैं। उनके साथ रहते हुए उन्होंने बचपन से ही पंचायत की कार्यप्रणाली, सरकारी योजनाओं, विकास कार्यों तथा प्रशासनिक प्रक्रियाओं को निकट से देखा और समझा। यही अनुभव आगे चलकर उनके भीतर जनसेवा की भावना और नेतृत्व का आत्मविश्वास विकसित करने का आधार बना।

वह बताती हैं कि ग्राम पंचायत चुनाव से पहले गाँव की बैठकों में यह विचार सामने आया कि इस बार किसी शिक्षित और सक्रिय महिला को नेतृत्व की जिम्मेदारी सौंपी जानी चाहिए। अधिकांश ग्रामीणों और विशेष रूप से युवाओं ने उनके नाम पर सहमति व्यक्त की तथा नामांकन कराने से लेकर चुनाव प्रचार तक पूरा सहयोग दिया। लगभग 75 प्रतिशत ग्रामीणों के समर्थन ने उनके आत्मविश्वास को और मजबूत किया। चुनाव का सफर पूरी तरह आसान नहीं था। मात्र 21 वर्ष की आयु और एक युवती होने के कारण उन्हें कई प्रकार की सामाजिक धारणाओं और पूर्वाग्रहों का सामना करना पड़ा। कुछ लोगों ने यह प्रश्न उठाया कि इतनी कम उम्र की लड़की ग्राम पंचायत जैसी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी कैसे निभा पाएगी। कुछ ने यह तर्क भी दिया कि विवाह के बाद वह ससुराल चली जाएगी, जिससे पंचायत का कार्य प्रभावित होगा। लेकिन प्रियंका ने इन आलोचनाओं का उत्तर शब्दों से नहीं, बल्कि अपने आत्मविश्वास, शिक्षा और सकारात्मक सोच से दिया। उनके समर्थकों का विश्वास था कि शिक्षित, ईमानदार और कर्मठ नेतृत्व उम्र का नहीं, बल्कि क्षमता का विषय होता है।

ग्राम प्रधान प्रियंका नेगी का मानना है कि किसी भी गाँव का वास्तविक विकास केवल सड़कों और भवनों के निर्माण से नहीं, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका और सामाजिक जागरूकता के समन्वित विकास से संभव है। इसी सोच के साथ उन्होंने अपने कार्यकाल की शुरुआत करते हुए ग्राम पंचायत की प्राथमिकताओं को स्पष्ट किया और जन सहभागिता के माध्यम से विकास कार्यों को गति देने का प्रयास किया। उनका कहना है कि मुख्यमंत्री जी द्वारा सारकोट को गोद लिए जाने के बाद गाँव में विकास योजनाओं के क्रियान्वयन में उल्लेखनीय तेजी आई है। सड़कों का डामरीकरण, स्ट्रीट लाइटों की स्थापना, सार्वजनिक स्थलों का सौंदर्यीकरण तथा विभिन्न आधारभूत सुविधाओं के विस्तार ने ग्रामीणों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाया है। युवा प्रधान अपनी अब तक की सबसे बड़ी उपलब्धि गाँव के जूनियर हाईस्कूल में स्मार्ट क्लास की स्थापना को मानती हैं। उनका विश्वास है कि गुणवत्तापूर्ण

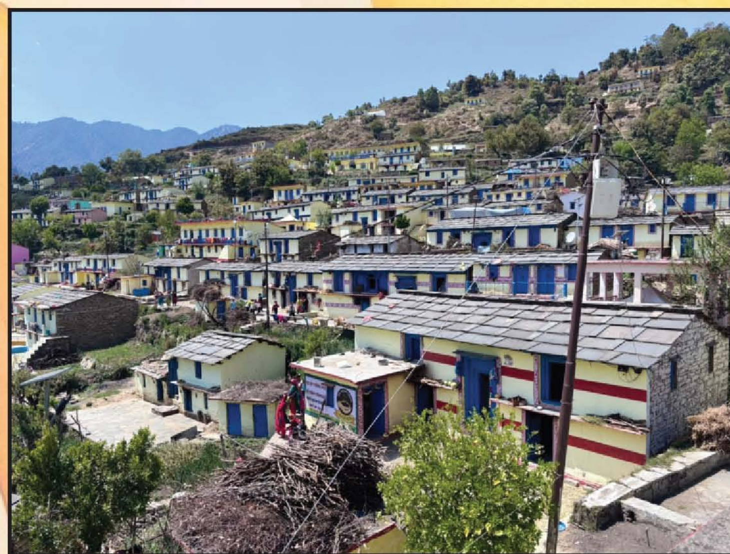

शिक्षा ही किसी भी समाज के स्थायी विकास की आधारशिला होती है। इसके अतिरिक्त जंगली जानवरों से स्थानीय फसलों की सुरक्षा के लिए फेंसिंग का कार्य भी प्रगति पर है, जिससे किसानों को राहत मिलने की उम्मीद है। ग्राम पंचायत ने सामाजिक सुधार की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए विवाह एवं अन्य सार्वजनिक आयोजनों में शराब पर पूर्ण प्रतिबंध लागू किया है। उनका मानना है कि स्वस्थ सामाजिक वातावरण ही समृद्ध गाँव की पहचान है। हालाँकि विकास की इस यात्रा में अनेक चुनौतियाँ भी सामने हैं। प्रियंका के अनुसार गैरसैंण क्षेत्र की सबसे बड़ी समस्या स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव है। अस्पताल होने के बावजूद विशेषज्ञ चिकित्सकों की कमी के कारण गंभीर मरीजों, विशेषकर गर्भवती महिलाओं को समय पर उपचार नहीं मिल पाता और सामान्य अल्ट्रासाउण्ड के लिए भी कर्णप्रयाग जाना पड़ता है। वे मानती हैं कि यदि गैरसैंण में आधुनिक सुविधाओं से युक्त अस्पताल विकसित हो जाए, तो पूरे क्षेत्र की स्वास्थ्य व्यवस्था में बड़ा सुधार आ सकता है। रोजगार के क्षेत्र में भी अभी काफी कार्य किए जाने की आवश्यकता है। रोजगार की चुनौती को ध्यान में रखते हुए प्रियंका डेयरी विकास, मशरूम उत्पादन, पॉलीहाउस आधारित सब्जी खेती तथा स्थानीय कृषि उत्पादों के मूल्य संवर्धन को बढ़ावा देने की योजना पर कार्य करना चाहती हैं।

उनका मानना है कि यदि युवाओं को गाँव में सम्मान जनक आजीविका उपलब्ध कराई जाए, तो पलायन पर प्रभावी नियंत्रण पाया जा सकता है। उनका मानना है कि उत्तराखण्ड के ग्रामीण विकास की वास्तविक शक्ति उसकी

महिलाएँ और युवा हैं। उनके अनुसार आज बेटियाँ शिक्षा, खेल, विज्ञान, प्रशासन और राजनीति सहित प्रत्येक क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का परिचय दे रही हैं, इसलिए उन्हें केवल पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए। वे कहती हैं कि ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के साथ–साथ निर्णय लेने की प्रक्रिया में भी सक्रिय भागीदारी निभानी चाहिए। सामाजिक बंधन पहले की तुलना में अवश्य कम हुए हैं, लेकिन पूर्ण समानता का लक्ष्य अभी शेष है। उनका विश्वास है कि शिक्षा, आत्मविश्वास और समाज का सहयोग महिलाओं को नेतृत्व की नई ऊँचाइयों तक पहुँचा सकता है। स्वयं उनके चुनाव ने यह सिद्ध किया कि जब समाज योग्य नेतृत्व पर भरोसा करता है, तब उम्र और लिंग जैसी धारणाएँ स्वतः पीछे छूट जाती हैं।

युवा प्रधान के रूप में प्रियंका नेगी विशेष रूप से किशोरियों और युवा महिलाओं के लिए संवाद और मार्गदर्शन का वातावरण तैयार करना चाहती हैं। उनका मानना है कि अनेक प्रतिभाशाली लड़कियाँ सामाजिक संकोच, सीमित अवसरों और जानकारी के अभाव में अपने सपनों को साकार नहीं कर पातीं। इसी उद्देश्य से वे युवाओं, विशेषकर युवतियों, के साथ नियमित संवाद और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने की योजना बना रही हैं, ताकि वे शिक्षा, कौशल विकास, स्वरोजगार और नेतृत्व के अवसरों का भरपूर लाभ उठा सकें।

पलायन के प्रश्न पर प्रियंका का दृष्टिकोण व्यावहारिक है। उनके अनुसार वर्तमान में सारकोट में 250 से 300 परिवार रहते हैं लेकिन स्थायी पलायन नहीं हुआ है, यदि स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर विकसित नहीं किए गए तो भविष्य में यह चुनौती गंभीर रूप ले सकती है। इसलिए उनकी प्राथमिकता ऐसे रोजगार मॉडल विकसित करने की है, जिनसे युवाओं को अपने ही गाँव में सम्मानजनक आजीविका मिल सके। भविष्य की योजनाओं के बारे में प्रियंका बताती हैं कि सारकोट और गैरसैंण क्षेत्र में पर्यटन की अपार संभावनाएँ हैं। सारकोट के सामने उत्तराखण्ड का पामीर दूधातोली स्थित है यदि वहां तक ट्रैकिंग मार्ग और पर्यटन सुविधाओं का योजनाबद्ध विकास किया जाए, तो स्थानीय युवाओं के लिए होमस्टे, पर्यटक गाइड, घोड़ा–खच्चर सेवा, स्थानीय हस्तशिल्प तथा पारंपरिक उत्पादों के विपणन जैसे अनेक रोजगार सृजित हो सकते हैं। इसके साथ ही वे डेयरी विकास, मशरूम उत्पादन, पॉलीहाउस खेती और महिला स्वयं सहायता समूहों को सशक्त बनाकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में कार्य करना चाहती हैं।

अपने राजनीतिक भविष्य के बारे में प्रियंका नेगी का कहना है कि उनकी प्राथमिकता पद प्राप्त करना नहीं, बल्कि जनता का विश्वास बनाए रखना है। वे चाहती हैं कि लोग यह महसूस करें कि उन्होंने एक युवा बेटी पर विश्वास करके सही निर्णय लिया। भविष्य में वे जनसेवा के इसी मार्ग पर आगे बढ़ते हुए जिला पंचायत सदस्य और विधायक जैसे दायित्वों तक पहुँचकर अपने क्षेत्र के व्यापक विकास में योगदान देना चाहती हैं। उनका विश्वास है कि ईमानदार नेतृत्व, पारदर्शिता और जनता के प्रति जवाबदेही ही लोकतंत्र की सबसे बड़ी शक्ति है, और इन्हीं मूल्यों के आधार पर उत्तराखण्ड के गाँव आत्मनिर्भर एवं समृद्ध बन सकते हैं। सारकोट की कहानी केवल एक ग्राम पंचायत की विकास यात्रा नहीं, बल्कि उत्तराखण्ड के ग्रामीण परिवर्तन, युवा नेतृत्व और महिला सशक्तिकरण की नई दिशा का सशक्त उदाहरण है। 21 वर्ष की आयु में ग्राम प्रधान बनकर प्रियंका नेगी ने यह सिद्ध किया है कि विकास की कोई आयु सीमा नहीं होती है यदि नेतृत्व में ईमानदारी, दूरदृष्टि और जनसेवा का भाव हो, तो सीमित संसाधनों के बीच भी परिवर्तन की नई इबारत लिखी जा सकती है। उनका नेतृत्व इस बात का प्रमाण है कि आज का युवा केवल बदलाव की बात नहीं करता, बल्कि स्वयं परिवर्तन का माध्यम भी बन रहा है।

प्रस्तुति–
कीर्तिराम डंगवाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
डॉ. शिवानन्द नौटियाल राजकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्णप्रयाग

'स्टोन पेंटिंग' से पत्थरों को सजीव कर रहे चित्रकार अजय कुमार

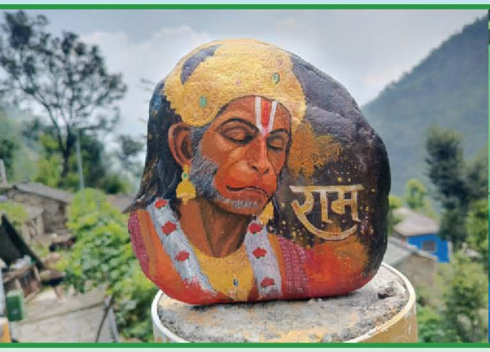

जनपद चमोली के दूरस्थ ग्राम थापली डांग (बणियास – बेनिताल) निवासी और कर्णप्रयाग महाविद्यालय के पूर्व छात्र अजय कुमार शानदार पोट्रेट और आकर्षक पोस्टर बनाकर क्षेत्र में अपनी एक खास पहचान बना चुके हैं। वर्तमान में वह नदी तट पर पड़े विभिन्न आकार के पत्थरों पर चित्रकारी कर उन्हें आकर्षक रूप देने में लगे हुए हैं। चित्रकारी की इस विधा को 'स्टोन पेंटिंग' के नाम से जाना जाता है। अजय कहते हैं कि हर कला के पीछे केवल कलाकार की मेहनत ही नहीं होती,बल्कि किसी न किसी की प्रेरणा भी छिपी होती है। 'स्टोन पेंटिंग' का 'आइडिया' मुझे मेरे बड़े भाई रविंद्र से मिला। उन्होंने सुझाव दिया कि साधारण से पत्थर को भगवान के किसी रूप में बदला जा सकता है। उनके इस विचार ने मेरी कल्पना को दिशा दी और रंगों तथा ब्रश ने उस कल्पना को आकार दिया। इस दिशा में सर्वप्रथम मैंने भगवान हनुमान के शांत और ध्यानमग्न रूप को उकेरने का प्रयास किया। 'स्टोन पेंटिंग' बनाने से पूर्व आपकी कल्पना और पत्थर के आकार में एक सामंजस्य होना आवश्यक है। 'स्टोन पेंटिंग' को मैं एक्रेलिक रंगों से बना रहा हूं। सामान्यतः एक्रेलिक रंगों का उपयोग पेपर और कैनवास पर किया जाता है।

प्रस्तुति – डॉ.मदन लाल शर्मा,
असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्णप्रयाग

उपलब्धि

पर्यावरण संरक्षक 'सुदेशा देवी' पर बनी डाक्यूमेंट्री फिल्म

'दिस ट्री वोंट फॉल' लंदन इंडियन फिल्म फेस्टिवल के लिए चयनित

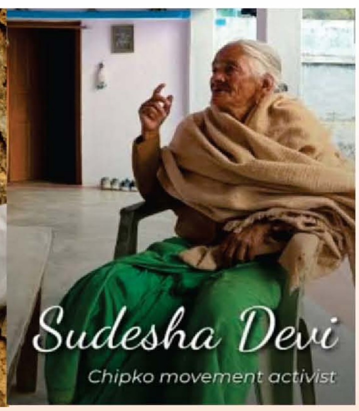

पर्यावरण की सजग प्रहरी सुदेशा देवी की जीवंत कहानी पर उत्तराखंड की चर्चित डाक्यूमेंट्री 'दिस ट्री वोंट फॉल' (ये पेड़ नहीं गिरेगा) का चयन प्रतिष्ठित लंदन इंडियन फिल्म फेस्टिवल के लिए हुआ है। यह फिल्म 83 वर्षीय सुदेशा देवी के संघर्ष,साहस और चिपको आंदोलन में उनके योगदान को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करती है। लगभग चार वर्षों में तैयार हुई यह डाक्यूमेंट्री उत्तराखंड के हिमालयी गावों की उन महिलाओं की प्रेरक कहानी को सामने लाती है,जिन्होंने लगभग पांच दशक पहले पेड़ों को कटने से बचाने के लिए उन्हें गले लगाकर विश्व प्रसिद्ध 'चिपको आंदोलन' को नई पहचान दी थी। फिल्म में दिखाया गया है कि सीमित संसाधनों और सामाजिक चुनौतियों के बावजूद महिलाओं ने पर्यावरण संरक्षण के लिए ऐतिहासिक भूमिका निभाई। टिहरी के युवा लेखक और फिल्मकार दीपक रमोला के अनुसार इतिहास के कुछ सबसे बड़े पर्यावरण आंदोलन गौरा देवी जैसी उन महिलाओं की पहल से शुरू हुए, जिनकी जिन्दगी उन जंगलों से गहराई से जुड़ी थी,जिन्हें वे अपना घर मानती थी। 'दिस ट्री वोंट फॉल' उस महिला की कहानी है,जिसने पेड़ों को कटने से बचाने को उन्हें गले से लगा लिया।

फिल्म की कहानी दीपक रमोला व अपूर्वा बख्शी ने लिखी है,निर्माण अपूर्वा बख्शी,दीपक रमोला व मनीषा त्यागराजन ने किया है। सिनेमैटोग्राफी सिद्धांत वर्मा और सिद्धार्थ गोविंदन की है। संपादन अजीत नायर व ध्रुव वर्मा और संगीत ताजदार जुनैद का है। फिल्म महिलाओं की पर्यावरणीय समझ,उनके नेतृत्व और जमीनी संघर्ष को प्रभावी ढंग से सामने लाती है। लंदन इंडियन फिल्म फेस्टिवल में चयन उत्तराखंड, चिपको आंदोलन और सुदेशा देवी के संघर्ष को अंतरराष्ट्रीय दर्शकों तक पहचाने का महत्वपूर्ण अवसर था। यह फेस्टिवल लंदन, बर्मिंघम और मैनचेस्टर में 19 जुलाई तक आयोजित हुआ।

प्रस्तुति : श्रीमती नीलम तलवाड़

इतिहास रचता एम्स ऋषिकेश

गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज कराई भारत की पहचान

चिकित्सा विज्ञान केवल रोगों के उपचार का माध्यम नहीं है, बल्कि यह मानवीय संवेदनाओं, वैज्ञानिक शोध, तकनीकी दक्षता और अदम्य साहस का संगम भी है। जब किसी अस्पताल की उपलब्धि विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त करती है, तो वह केवल उस संस्थान की सफलता नहीं होती, बल्कि पूरे देश की चिकित्सा क्षमता, वैज्ञानिक सोच और स्वास्थ्य व्यवस्था की प्रतिष्ठा का प्रतीक बन जाती है। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), ऋषिकेश ने ऐसा ही एक स्वर्णिम अध्याय रचते हुए चिकित्सा जगत में नया इतिहास स्थापित किया है। संस्थान के चिकित्सकों द्वारा 27 वर्षीय मरीज के बाएं पैर की जांघ से लगभग 35 किलोग्राम वजन के बोन ट्यूमर को सफलतापूर्वक निकालने की जटिल शल्य चिकित्सा को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में स्थान मिलना न केवल उत्तराखंड बल्कि पूरे भारत के लिए गर्व का विषय है।

यह उपलब्धि इसलिए भी विशेष है क्योंकि यह किसी सामान्य ऑपरेशन का परिणाम नहीं थी। इतने विशाल आकार के बोन ट्यूमर को निकालना चिकित्सा विज्ञान की दृष्टि से अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य माना जाता है। सर्जरी के दौरान अत्यधिक रक्तस्राव, नसों और मांसपेशियों की सुरक्षा, संक्रमण की आशंका तथा मरीज के जीवन को सुरक्षित रखना किसी भी चिकित्सकीय दल के लिए कठिन परीक्षा होती है। ऐसे में एम्स ऋषिकेश के विशेषज्ञ चिकित्सकों ने अपनी कुशलता, अनुभव और आधुनिक चिकित्सा तकनीक के बल पर इस असंभव प्रतीत होने वाले कार्य को संभव कर दिखाया। 9 जून 2025 को संपन्न हुई इस ऐतिहासिक शल्य चिकित्सा का नेतृत्व हड्डी रोग विभाग के प्रोफेसर डॉ. मोहित धींगरा, सीटीवीएस विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. अंशुमान दरबारी तथा बर्न एवं प्लास्टिक सर्जरी विभाग की प्रोफेसर डॉ. मधुवरी वाथुल्या सहित विभिन्न विभागों के विशेषज्ञ चिकित्सकों ने किया। बहु–विषयक (मल्टी–डिसिप्लिनरी) टीमवर्क का यह उत्कृष्ट उदाहरण दर्शाता है कि जटिल चिकित्सा चुनौतियों का समाधान केवल सामूहिक विशेषज्ञता और समन्वय से ही संभव है।

इस सर्जरी की सफलता के बाद संस्थान ने इसकी विस्तृत जानकारी गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड को भेजी गई। इंग्लैंड के लंदन स्थित संस्था द्वारा सभी चिकित्सकीय दस्तावेजों, साक्ष्यों और तथ्यों का गहन परीक्षण किया गया। सत्यापन के उपरांत इस उपलब्धि को विश्व रिकॉर्ड के रूप में मान्यता प्रदान की गई और एम्स ऋषिकेश की चिकित्सकीय टीम को आधिकारिक प्रशस्तिपत्र प्रदान किया गया। यह सम्मान वर्षों की मेहनत, अनुसंधान, अनुशासन और उत्कृष्ट चिकित्सा सेवाओं का वैश्विक प्रमाण है।

विशेष उल्लेखनीय तथ्य यह भी है कि इससे पहले वर्ष 2002 में भारत में 16.5 किलोग्राम वजन वाले बोन ट्यूमर की सफल सर्जरी को बड़ी उपलब्धि माना गया था। आज एम्स ऋषिकेश ने 35 किलोग्राम वजन के बोन ट्यूमर की सफल शल्य चिकित्सा कर उस रिकॉर्ड को बहुत पीछे छोड़ दिया है। यह उपलब्धि बताती है कि भारतीय चिकित्सा विज्ञान निरंतर नई ऊँचाइयों को छू रहा है और विश्व के अग्रणी चिकित्सा संस्थानों की श्रेणी में मजबूती से अपनी पहचान बना रहा है।

एम्स ऋषिकेश की कार्यकारी निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रोफेसर डॉ. मीनू सिंह ने इस उपलब्धि को 'इतिहास रचने वाला क्षण' बताते हुए कहा कि संस्थान हर मरीज को सर्वोत्तम चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। उनका यह वक्तव्य केवल एक औपचारिक प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि उस संस्थागत संस्कृति का परिचायक है जिसमें रोगी सर्वोपरि है और चिकित्सा सेवा को मानवता का सर्वोच्च धर्म माना जाता है। आज जब चिकित्सा क्षेत्र तेजी से तकनीकी बदलावों के दौर से गुजर रहा है, तब एम्स ऋषिकेश जैसी संस्थाओं की सफलता यह सिद्ध करती है कि भारत केवल स्वास्थ्य सेवाओं का उपभोक्ता नहीं, बल्कि चिकित्सा नवाचारों और जटिल उपचारों का वैश्विक केंद्र बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। यह उपलब्धि देश के युवा चिकित्सकों, शोधकर्ताओं और मेडिकल विद्यार्थियों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत है कि समर्पण, ज्ञान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बल पर विश्व स्तर पर पहचान बनाई जा सकती है। यह सफलता उत्तराखंड जैसे पर्वतीय राज्य के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। कभी गंभीर और जटिल उपचार के लिए महानगरों या विदेशों का रुख करने वाले मरीजों के लिए अब एम्स ऋषिकेश विश्वस्तरीय चिकित्सा का भरोसेमंद केंद्र बनकर उभरा है। इससे न केवल मरीजों का विश्वास बढ़ेगा, बल्कि चिकित्सा पर्यटन, अनुसंधान और आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं के विकास को भी नई गति मिलेगी। गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज यह उपलब्धि केवल एक रिकॉर्ड नहीं, बल्कि भारत की चिकित्सा क्षमता, वैज्ञानिक उत्कृष्टता और मानवीय सेवा का वैश्विक प्रमाण है। यह संदेश भी देती है कि यदि संस्थानों को योग्य नेतृत्व, आधुनिक संसाधन और समर्पित चिकित्सकीय टीम मिले, तो भारतीय चिकित्सा विज्ञान किसी भी वैश्विक चुनौती का सामना करने में सक्षम है। एम्स ऋषिकेश का यह गौरवपूर्ण अध्याय आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहेगा। यह उपलब्धि बताती है कि चिकित्सा का वास्तविक उद्देश्य केवल जीवन बचाना नहीं, बल्कि असंभव को संभव बनाकर मानवता के विश्वास को नई ऊँचाइयों तक पहुंचाना भी है।

प्रस्तुति :
अंकित तिवारी, उप संपादक

बारहनाजा पद्धति : उत्तराखंड का समृद्ध और सतत आत्मनिर्भर भविष्य

हिमालय की गोद में बसा उत्तराखंड अपनी अलौकिक प्राकृतिक सुंदरता के साथ–साथ समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए भी जाना जाता है। बदलते दौर में जहां आधुनिक कृषि रसायनों, कीटनाशकों और एकल खेती के बोझ तले दबकर अपनी उपज क्षमता खो रही है, वहीं उत्तराखंड की पारंपरिक बारहनाजा पद्धति आज पूरे विश्व के लिए सतत और आत्मनिर्भर कृषि का एक उत्कृष्ट प्रारुप बनकर उभरी है। यह केवल खेती करने का एक तरीका नहीं है, बल्कि यह पहाड़ों की पारिस्थितिकी, जैव विविधता, खाद्य सुरक्षा और आत्मनिर्भरता को बनाए रखने का एक संपूर्ण विज्ञान है।

'बारहनाजा' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है–'बारह' यानी संख्या 12 और 'नाजा' यानी अनाज। इस पारंपरिक मिश्रित कृषि प्रणाली के तहत एक ही खेत में एक साथ 12 या उससे अधिक प्रकार की फसलें उगाई जाती हैं। यह प्रणाली मुख्य रूप से उत्तराखंड के गढ़वाल मंडल के वर्षा आधारित, गैर–सिंचित पहाड़ी क्षेत्रों में सदियों से अपनाई जा रही है। इस व्यवस्था में फसलों का चयन बेहद वैज्ञानिक तरीके से किया जाता है। **इसमें अनाज, दलहन, तिलहन, सब्जियां और रेशेदार फसलें एक साथ मिलकर एक सहजीवी संबंध बनाती हैं।** ये फसलें एक–दूसरे के विकास में बाधा बनने के बजाय एक–दूसरे की पूरक बनती हैं। इस अनूठी कृषि प्रणाली में उगाई जाने वाली मुख्य फसलों को उनके पोषण और प्रकृति के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है।

मंडुआ, कौणी और झंगोरा को इस पद्धति का राजा माना जाता है। यह सूखा–रोधी और अत्यधिक पौष्टिक अनाज है जो कम पानी में तेजी से उगती है। चौलाई के फूल खेतों को सुंदर बनाते हैं और इसके बीज व पत्तियां दोनों अत्यंत पौष्टिक होते हैं। कुट्टू ऊंचाई वाले क्षेत्रों में उगाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण अनाज है। गहत दाल गुर्दे की पथरी के इलाज के लिए पारंपरिक चिकित्सा में प्रसिद्ध है। भट प्रोटीन का एक समृद्ध स्रोत है जो पहाड़ों के भोजन का मुख्य हिस्सा है। पहाड़ी राजमा अपनी रंगत और बेमिसाल स्वाद के लिए देश भर में मशहूर है। उड़द, लोबिया और अरहर नाइट्रोजन स्थिरीकरण करने वाली दाल है। तिल, तेल और पूजा–पाठ की परंपराओं के लिए एक आवश्यक तिलहन है। जख्या का उपयोग तड़के के लिए किया जाता है। बारहनाजा पद्धति का सबसे बड़ा आकर्षण इसका पूरी तरह से शून्य–लागत और जैविक होना है। इसमें रासायनिक खादों या कीटनाशकों की कोई आवश्यकता नहीं होती। इस प्रणाली में शामिल दलहनी फसलें जैसे भट, गहत, लोबिया अपनी जड़ों में मौजूद बैक्टीरिया की मदद से वायुमंडलीय नाइट्रोजन को मिट्टी में स्थिर करती हैं। यह प्राकृतिक नाइट्रोजन मंडुआ, कौणी और झंगोरा जैसे अनाजों के लिए बिना किसी कृत्रिम यूरिया के

बेहतरीन खाद का काम करती है। विभिन्न प्रकार की फसलों की जड़ें मिट्टी की अलग–अलग गहराइयों तक जाती हैं। कुछ पौधों की जड़ें उथली होती हैं तो कुछ की गहरी। इससे मिट्टी के हर स्तर से पोषक तत्वों का सही इस्तेमाल होता है। साथ ही, बेल वाली और जमीन पर फैलने वाली फसलें जैसे लोबिया और खीरा मिट्टी को पूरी तरह ढक देती हैं, जिससे तेज धूप में भी नमी बनी रहती है और भारी बारिश में मिट्टी का कटाव नहीं होता।

एकल खेती में कीड़े पूरी फसल को एक साथ नष्ट कर देते हैं। लेकिन बारहनाजा में फसलों की विविधता के कारण कीट भ्रमित हो जाते हैं। कुछ फसलों की गंध प्राकृतिक रूप से कीड़ों को दूर भगाती है, जिससे पूरी फसल सुरक्षित रहती है। हालांकि, इसकी कुछ जैविक सीमाएं भी हैं। यह प्रणाली हवा या अन्य क्षेत्रों से आने वाले कीटों द्वारा फैलने वाली बीमारियों को पूरी तरह से नहीं रोक सकती। साथ ही, फ्यूजेरियम *(Fusarium)* जैसे कवक संक्रमण, जो बिना किसी मेजबान पौधे के भी लंबे समय तक मिट्टी में जीवित रह सकते हैं, उन्हें पूरी तरह दबाने में यह असमर्थ रहती है पहाड़ी क्षेत्रों में मौसम हमेशा अनिश्चित रहता है। ऐसी स्थिति में **बारहनाजा प्रणाली किसानों के लिए एक बीमा पॉलिसी की तरह काम करती है। यदि मौसम की मार के कारण कोई एक या दो फसलें खराब भी हो जाएं, तो भी मंडुआ, कौणी, झंगोरा या चौलाई जैसी फसलें बची रहती हैं और किसान कभी भी पूरी तरह खाली हाथ नहीं होता।**

एक ही खेत से परिवार को कार्बोहाइड्रेट (अनाज), प्रोटीन (दालें), वसा (तिलहन), और विटामिन व खनिज (सब्जियां) मिल जाते हैं।इसका सबसे बड़ा उदाहरण 1987 का ऐतिहासिक सूखा था, जब भारत के अधिकांश मैदानी और अन्य हिस्सों में फसलें पूरी तरह बर्बाद हो गई थीं, लेकिन उत्तराखंड के गढ़वाल हिमालय के जिन क्षेत्रों में बारहनाजा प्रणाली अपनाई गई थी, वहां किसानों ने अपने परिवार के भरण–पोषण के लिए पर्याप्त अनाज का उत्पादन किया था। यह कुपोषण के खिलाफ पहाड़ों की अपनी सुरक्षा प्रणाली है।इन फसलों के कटने के बाद बचने वाला भूसा और सूखी पत्तियां मवेशियों के लिए साल भर पौष्टिक चारे का काम करती हैं, जिससे दुग्ध उत्पादन भी बढ़ता है।

आज पूरा विश्व जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग के खतरों से जूझ रहा है। ऐसे में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मिलेट्स और जैविक खेती को अपनाने पर जोर दिया जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा मनाए गए 'अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष' ने भी उत्तराखंड के मंडुआ, कौणी और झंगोरा जैसे अनाजों को वैश्विक पहचान दिलाई है। उत्तराखंड के सतत और आत्मनिर्भर भविष्य के लिए बारहनाजा पद्धति को आधुनिक रूप में आगे बढ़ाना बेहद जरूरी है। यदि पहाड़ों के इन शुद्ध जैविक उत्पादों की पैकेजिंग बेहतर की जाए और इनके बिस्कुट, नूडल्स या सत्तू जैसे उत्पाद बनाए जाएं, तो स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। पहाड़ों से होने वाले पलायन को रोकने में यह पद्धति गेम–चेंजर साबित हो सकती है। जैविक उत्पादों की बढ़ती मांग के कारण अब किसान अपने खेतों से अच्छी आमदनी कर रहे हैं। उत्तराखंड में सकल पर्यावरण उत्पाद (GEP) और बारहनाजा पद्धति का गहरा संबंध है। ये दोनों मिलकर राज्य में पारिस्थितिकी (Ecology) और अर्थव्यवस्था (Economy) के बीच संतुलन बनाने के सबसे मजबूत स्तंभ हैं।उत्तराखंड देश का पहला ऐसा राज्य है जिसने अपने प्राकृतिक संसाधनों को आर्थिक मूल्य देने के लिए जीईपी इंडेक्स लागू किया है। इस सूचकांक में 'मृदा–जीईपी' यानी मिट्टी की सेहत सुधारने का मूल्यांकन एक मुख्य पैमाना है, जिसे बढ़ाने में बारहनाजा पद्धति सीधे तौर पर योगदान देती है। उत्तराखंड की बारहनाजा पद्धति महज अतीत की कोई पुरानी व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह भविष्य की कृषि का एक बेहद व्यावहारिक और वैज्ञानिक खाका है। यह हमें सिखाती है कि प्रकृति के साथ लड़कर नहीं, बल्कि उसके साथ तालमेल बिठाकर ही मनुष्य का अस्तित्व सुरक्षित रह सकता है। इस पारंपरिक ज्ञान को सहेजकर और इसे आधुनिक तकनीक व बाजार से जोड़कर उत्तराखंड न केवल विकसित राज्यों की कतार में पर खड़ा हो सकता है, बल्कि पूरी दुनिया को एक सतत, स्वस्थ और समृद्ध भविष्य की राह दिखा सकता है।

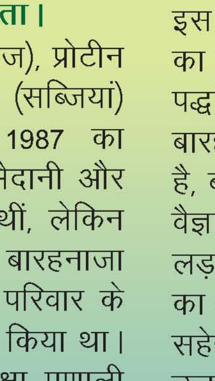

प्रस्तुति : डॉ. इंद्रेश कुमार पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर (वनस्पति विज्ञान),
डॉ. शिवानंद नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्णप्रयाग

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत उच्च शिक्षा की नई शब्दावली : एक सरल मार्गदर्शिका

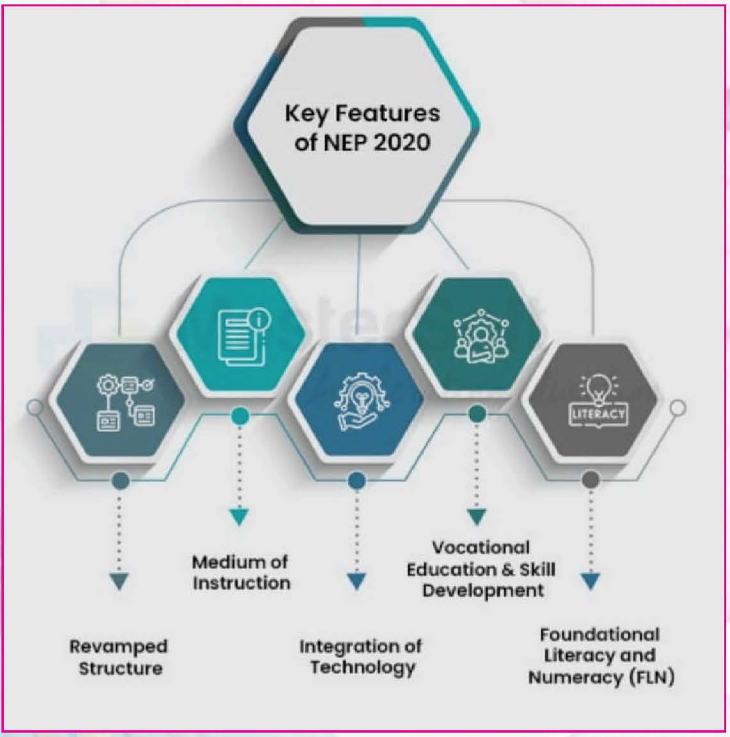

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक व्यापक परिवर्तन का प्रयास है। इसका उद्देश्य शिक्षा को अधिक लचीला, बहुविषयी, कौशल–आधारित, रोजगारोन्मुख तथा विद्यार्थी–केंद्रित बनाना है। उच्च शिक्षा में प्रवेश करने वाले अधिकांश विद्यार्थियों के लिए DSC, DSE, GE, AEC, SEC, VAC, IAPC, Dissertation, Major, Minor, Credit तथा Academic Bank of Credits (ABC) जैसी शब्दावलियाँ नई और जटिल प्रतीत होती हैं। परिणामस्वरूप अनेक विद्यार्थी यह समझ नहीं पाते कि कौन–सा विषय अनिवार्य है, कौन–सा वैकल्पिक है, किस विषय का उनके भविष्य से क्या संबंध है और उनकी शैक्षणिक यात्रा किस प्रकार आगे बढ़ेगी।

विशेष रूप से विद्यालय से महाविद्यालय में प्रवेश करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह परिवर्तन अचानक और चुनौतीपूर्ण होता है। कई बार उन्हें यह भी स्पष्ट नहीं होता कि कौन–सा विषय कौन–सा शिक्षक पढ़ा रहा है, किस विषय की परीक्षा कब है, कौन–सा पाठ्यक्रम मुख्य है और कौन–सा सहायक। इसलिए आवश्यक है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति की नई शब्दावली को सरल, व्यावहारिक और जीवन से जुड़े उदाहरणों के माध्यम से समझाया जाए ताकि विद्यार्थी, शिक्षक और अभिभावक सभी इसके वास्तविक उद्देश्य को समझ सकें।

CBCS से NEP तक का परिवर्तन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि इससे पहले उच्च शिक्षा में मुख्य रूप से CBCS (Choice Based Credit System) लागू था। CBCS का उद्देश्य विद्यार्थियों को कुछ हद तक विषय चयन की स्वतंत्रता देना था, किंतु व्यवहार में अधिकांश विद्यार्थियों का अध्ययन अभी भी एक ही विषय तक सीमित रहता था।

NEP–2020 ने इस व्यवस्था को और अधिक लचीला बनाया है। अब विद्यार्थी केवल अपने मुख्य विषय तक सीमित नहीं रहता, बल्कि अन्य विषयों का भी अध्ययन कर सकता है। इसके माध्यम से बहुविषयी शिक्षा (Multidisciplinary Education), कौशल विकास, शोध, इंटर्नशिप तथा जीवन–मूल्यों को भी पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया है। पहले शिक्षा का केंद्र केवल विषयगत ज्ञान था, जबकि अब ज्ञान, कौशल, मूल्य, अनुभव और रोजगार सभी को समान महत्व दिया गया है।

क्रेडिट प्रणाली (Credit System) की सरल व्याख्या

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत (क्रेडिट) एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। सरल शब्दों में क्रेडिट उस शैक्षणिक कार्य का माप है जो विद्यार्थी किसी पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए करता है। **जैसे बैंक में धन जमा किया जाता है, उसी प्रकार विद्यार्थी सफलतापूर्वक पूर्ण किए गए प्रत्येक पाठ्यक्रम के बदले शैक्षणिक क्रेडिट अर्जित करता है।** जितने अधिक पाठ्यक्रम पूरे होंगे, उतने अधिक क्रेडिट प्राप्त होंगे। निर्धारित संख्या में क्रेडिट पूर्ण करने पर विद्यार्थी को डिग्री प्रदान की जाती है। विद्यार्थियों को यह समझना चाहिए कि अब केवल परीक्षा पास करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि प्रत्येक पाठ्यक्रम से जुड़े क्रेडिट भी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वही उनकी शैक्षणिक प्रगति का आधार बनते हैं।

Academic Bank of Credits (ABC) क्या है ?

ABC राष्ट्रीय शिक्षा नीति की एक अभिनव व्यवस्था है। इसे विद्यार्थियों के लिए एक डिजिटल शैक्षणिक बैंक के रूप में समझा जा सकता है। जिस प्रकार बैंक खाते में धन सुरक्षित

रहता है, उसी प्रकार विद्यार्थी द्वारा अर्जित किए गए क्रेडिट ABC खाते में सुरक्षित रहते हैं। यदि किसी कारणवश विद्यार्थी अपनी पढ़ाई बीच में छोड़ देता है और बाद में पुनः प्रवेश लेता है, तो उसके पूर्व अर्जित क्रेडिट नष्ट नहीं होते। वह उन्हीं क्रेडिट के आधार पर अपनी शिक्षा आगे जारी रख सकता है।

यह व्यवस्था विद्यार्थियों को लचीलापन प्रदान करती है और शिक्षा को अधिक समावेशी बनाती है। विशेष रूप से उन विद्यार्थियों के लिए यह अत्यंत उपयोगी है जिन्हें आर्थिक, सामाजिक या व्यक्तिगत कारणों से पढ़ाई में व्यवधान का सामना करना पड़ता है।

Major, Minor और Multidisciplinary Education

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का एक महत्वपूर्ण पक्ष Major और Minor विषयों की अवधारणा है।

Major वह विषय होता है जिसमें विद्यार्थी मुख्य रूप से विशेषज्ञता प्राप्त करता है। उदाहरण के लिए यदि किसी विद्यार्थी का Major विषय हिंदी है, तो उसका अधिकांश अध्ययन हिंदी से संबंधित होगा।

Minor वह विषय होता है जिसे विद्यार्थी सहायक या पूरक विषय के रूप में चुनता है। उदाहरण के लिए हिंदी का विद्यार्थी राजनीति विज्ञान, इतिहास, समाजशास्त्र या मनोविज्ञान को Minor विषय के रूप में चुन सकता है। इसी प्रकार Multidisciplinary Education का अर्थ है कि विद्यार्थी विभिन्न विषयों का अध्ययन करके व्यापक दृष्टिकोण विकसित करे। आज के समय में केवल एक विषय का ज्ञान पर्याप्त नहीं माना जाता। इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति विद्यार्थियों को विविध विषयों, कौशलों और अनुभवों से जोड़ने का प्रयास करती है।

उच्च शिक्षा में नई शब्दावली को समझने की आवश्यकता

नई शिक्षा नीति के अंतर्गत प्रयुक्त शब्दावलियाँ अनेक विद्यार्थियों के लिए भ्रम की स्थिति उत्पन्न करती हैं। प्रथम वर्ष में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों को अक्सर DSC, DSE, GE, SEC और VAC के बीच का अंतर समझने में कठिनाई होती है। कई बार परीक्षा के समय भी विद्यार्थी यह स्पष्ट नहीं कर पाते कि किस पाठ्यक्रम की परीक्षा आयोजित हो रही है।

यह स्थिति केवल विद्यार्थियों की समस्या नहीं है, बल्कि नई शैक्षणिक संरचना की अपर्याप्त समझ का परिणाम भी है। इसलिए प्रत्येक महाविद्यालय में नवप्रवेशी विद्यार्थियों के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए, ताकि उन्हें पाठ्यक्रम संरचना और शब्दावली की स्पष्ट जानकारी मिल सके।

1. **DSC (Discipline Specific Core) मुख्य विषय के अनिवार्य पेपर –**

DSC वे पाठ्यक्रम होते हैं जो किसी भी विषय की मूल आधारशिला का निर्माण करते हैं। इन्हें पढ़ना प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अनिवार्य होता है। यदि किसी विद्यार्थी का मुख्य विषय हिंदी है, तो हिंदी साहित्य का इतिहास, हिंदी कविता, हिंदी गद्य और भाषा विज्ञान जैसे विषय DSC के अंतर्गत आते हैं।

सरल भाषा में DSC वह है जिसे पढ़े बिना विद्यार्थी अपने विषय की मूल समझ विकसित नहीं कर सकता। यह घर की नींव के समान है।

2. **DSE (Discipline Specific Elective) –मुख्य विषय के वैकल्पिक पेपर –**

DSE ऐसे विषय होते हैं जिन्हें विद्यार्थी अपनी रुचि और भविष्य की योजनाओं के अनुसार चुन सकता है। ये विषय मुख्य विषय से संबंधित होते हैं, लेकिन इनमें चयन की स्वतंत्रता होती है। हिंदी विषय के विद्यार्थी लोक साहित्य, पत्रकारिता, अनुवाद अध्ययन या फिल्म और साहित्य जैसे विषय चुन सकते हैं। DSE विद्यार्थियों को अपने विषय में विशेषज्ञता विकसित करने का अवसर प्रदान करता है।

3. **GE (Generic Elective)– दूसरे विषय से चुना गया वैकल्पिक पेपर –**

GE का उद्देश्य विद्यार्थियों को अन्य विषयों का ज्ञान प्रदान करना है। हिंदी का विद्यार्थी राजनीति विज्ञान, इतिहास, समाजशास्त्र अथवा मनोविज्ञान जैसे विषयों का अध्ययन कर सकता है। GE विद्यार्थियों की दृष्टि को व्यापक बनाता है और उन्हें बहुविषयी समझ विकसित करने में सहायता करता है।

4. **AEC (Ability Enhancement Course)– योग्यता संवर्धन पाठ्यक्रम –**

   AEC विद्यार्थियों की भाषा, संप्रेषण और अभिव्यक्ति क्षमता को विकसित करने के लिए बनाया गया है। इसके अंतर्गत भाषा, लेखन, अनुवाद तथा संचार कौशल से संबंधित विषय पढ़ाए जाते हैं। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को प्रभावी ढंग से बोलने, लिखने और अपनी बात प्रस्तुत करने की क्षमता प्रदान करता है।

5. **SEC (Skill Enhancement Course)– कौशल विकास पाठ्यक्रम–**

SEC का उद्देश्य विद्यार्थियों में रोजगारोन्मुख कौशल विकसित करना है। कंप्यूटर, डिजिटल मीडिया, कंटेंट राइटिंग, संपादन और अन्य व्यावहारिक विषय इसके अंतर्गत आते हैं। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को केवल ज्ञान ही नहीं देता, बल्कि कार्यक्षेत्र में सफल होने की तैयारी भी कराता है।

6. VAC (Value Added Course)–मूल्य संवर्धन पाठ्यक्रम–

VAC विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व को विकसित करने का प्रयास करता है। पर्यावरण अध्ययन, भारतीय ज्ञान परंपरा, योग, संविधान और नैतिक शिक्षा जैसे विषय इसके अंतर्गत आते हैं। इनका उद्देश्य बेहतर नागरिक और बेहतर मानव का निर्माण करना है।

7. IAPC (Internship, Apprenticeship, Project and Community Engagement)-

IAPC विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन के अनुभवों से जोड़ता है। इसके अंतर्गत इंटर्नशिप, परियोजना कार्य, सामुदायिक सेवा और सामाजिक सर्वेक्षण जैसी गतिविधियाँ शामिल होती हैं। यह विद्यार्थियों को कक्षा के बाहर सीखने और समाज से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है।

8. Dissertation – लघु शोध–प्रबंध –

Dissertation वह चरण है जिसमें विद्यार्थी किसी विशेष विषय पर स्वतंत्र रूप से शोध कार्य करता है। इसमें समस्या चयन, सामग्री संग्रह, विश्लेषण और निष्कर्ष प्रस्तुत करना शामिल होता है। हालांकि यह पहले भी था। पहले यह प्रत्येक सेमेस्टर में नहीं था। NEP 2020 के आधार पर स्नातकोत्तर स्तर पर यह प्रत्येक सेमेस्टर में रखा गया है। यह विद्यार्थियों में शोध दृष्टि, आलोचनात्मक चिंतन और ज्ञान सृजन की क्षमता विकसित करता है।

विद्यार्थियों को सबसे सरल तरीके से कैसे समझाएँ ?

यदि इन सभी शब्दों को घर के उदाहरण से समझाया जाए तो इन्हें याद रखना अत्यंत आसान हो जाता है।

DSC = घर की नींव
DSE = कमरे की विशेष सजावट
GE = पड़ोस के घर को जानना
AEC = बोलना और लिखना सीखना
SEC = काम करने की कला सीखना
VAC = अच्छे संस्कार और मूल्य सीखना
IAPC = मैदान में उतरकर अनुभव प्राप्त करना
Dissertation = स्वयं खोज और शोध करना

निष्कर्षतः,राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की नई शब्दावली का उद्देश्य विद्यार्थियों को भ्रमित करना नहीं, बल्कि उन्हें अधिक अवसर, अधिक विकल्प और अधिक संभावनाएँ प्रदान करना है।

आवश्यकता केवल इस बात की है कि इन शब्दों को जटिल अंग्रेजी अवधारणाओं के रूप में नहीं, बल्कि उनके वास्तविक उद्देश्य और उपयोगिता के आधार पर समझाया जाए। जब विद्यार्थी समझ जाएगा कि DSC उसकी नींव है, DSE उसकी विशेषज्ञता है, GE उसकी व्यापक दृष्टि है, A EC उसकी अभिव्यक्ति है, SEC उसका कौशल है, VAC उसके मूल्य हैं, IAPC उसका अनुभव है और Dissertation उसका शोध है, तब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की वास्तविक भावना साकार हो सकेगी।

*प्रस्तुति –
डॉ.चंद्रकांत तिवारी,असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग राजकीय महाविद्यालय
बलुवाकोट (पिथौरागढ़)*

महिला सशक्तिकरण

उच्च शिक्षा प्राप्त करने में उत्तराखंड की लड़कियां, लड़कों से आगे

उत्तराखंड देश के उन टॉप 10 राज्यों में शामिल हो गया है,जहां उच्च शिक्षा ग्रहण करने में लड़कियां,लड़कों से आगे हैं। केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय की ओर से जारी अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण (एआईएसएचई) की शैक्षणिक रिपोर्ट में उत्तराखंड की उच्च शिक्षा को लेकर बहुत ही सकारात्मक और उत्साहजनक आंकड़े सामने आए हैं।

रिपोर्ट के अनुसार राज्य में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के मामले में लड़कियां, लड़कों से काफी आगे हैं। पिछले पांच वर्ष में उच्च शिक्षा में नामांकन करने में भी छात्राओं की संख्या में वृद्धि हुई है। उत्तराखंड की छात्राओं का रुझान इंजीनियरिंग या तकनीकी कोर्सेज के बजाय पारंपरिक विषयों (जैसे कला और विज्ञान) में डिग्री लेने की तरफ देखा जा रहा है।

रिपोर्ट में उच्च शिक्षा में लड़कियों की इस बढ़ती भागीदारी को महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक बेहद सकारात्मक कदम बताया गया है।

प्रस्तुति : श्रीमती नीलम तलवाड़

पतंजलि रिसर्च फाउंडेशन का एम्स ऋषिकेश के साथ एमओयू

भारत की पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के साथ जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, पतंजलि रिसर्च फाउंडेशन, यूनिवर्सिटी ऑफ पतंजलि और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान,ऋषिकेश ने 9 जुलाई को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर कर औपचारिक सहयोग की शुरुआत की। यह समझौता क्लिनिकल अध्ययन, वैज्ञानिक अनुसंधान, शैक्षणिक साझेदारी, शोधकर्ताओं एवं विषय–विशेषज्ञों के आदान–प्रदान तथा स्वास्थ्य विज्ञान में नवाचार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया है। इस रणनीतिक साझेदारी के माध्यम से आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा की पूरक शक्तियों का उपयोग कर वैज्ञानिक प्रमाणों पर आधारित स्वास्थ्य सेवाओं का विकास किया जाएगा, जिससे मरीजों और समाज दोनों को लाभ मिलेगा।

पतंजलि रिसर्च फाउंडेशन के प्रमुख आचार्य बालकृष्ण ने कहा कि यह सहयोग केवल सहभागी संस्थानों के बीच साझेदारी को ही मजबूत नहीं करेगा, बल्कि भारत में एकीकृत स्वास्थ्य सेवा मॉडल को भी सशक्त बनाएगा, जहाँ भारतीय पारंपरिक चिकित्सा ज्ञान और आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतियाँ मिलकर कार्य करेंगी। एम्स ऋषिकेश की कार्यकारी निदेशक एवं सीईओ प्रो. मीनू सिंह ने कहा कि आधुनिक चिकित्सा और पारंपरिक ज्ञान के बीच वैज्ञानिक संवाद और सहयोग समय की आवश्यकता है। इस अवसर पर यूनिवर्सिटी ऑफ पतंजलि के प्रो–वाइस चांसलर प्रो. मयंक कुमार अग्रवाल, एम्स ऋषिकेश के डीन (रिसर्च) प्रो. शैलेन्द्र हांडू तथा पतंजलि रिसर्च फाउंडेशन के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. अनुराग वार्ष्णेय भी उपस्थित थे। यह तीनों संस्थानों के बीच सहयोग भारत में एकीकृत स्वास्थ्य अनुसंधान के नए अध्याय की शुरुआत है। इसका उद्देश्य वैज्ञानिक उपलब्धियों को गति देना, प्रमाण–आधारित स्वास्थ्य समाधान विकसित करना और ऐसे नवाचारों को बढ़ावा देना है जिनसे भारत ही नहीं बल्कि विश्वभर के लाखों लोगों को लाभ मिल सके। आयुर्वेद, आधुनिक चिकित्सा, शिक्षा और अनुसंधान के बीच मजबूत संबंध स्थापित कर यह साझेदारी भारत को वैश्विक स्वास्थ्य नवाचार के क्षेत्र में अग्रणी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

प्रस्तुति–
प्रो. जानकी पंवार,
सेवानिवृत्त प्राचार्य, सदस्य सलाहकार मंडल
साईं सृजन पटल

पर्वतारोहण

उत्तरकाशी के क्लाइम्बिंग गाइड्स की माउंट त्रिशूल आरोहण में महत्वपूर्ण भूमिका

जनपद उत्तरकाशी की गंगा घाटी भुक्की के क्लाइम्बिंग गाईड सौरभ रावत व यमुना घाटी बड़कोट के आशुतोष राणा ने 7,120 मीटर ऊंची माउंट त्रिशूल चोटी के सफल अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह अभियान 1 जून से 22 जून तक संचालित किया गया। इस पर्वतारोहण अभियान का आयोजन Parvat Exploration द्वारा किया गया, जबकि अभियान ONGC द्वारा प्रायोजित था। अभियान के सदस्य नीरज पटेल,जो गांधीनगर गुजरात के निवासी व ONGC के कर्मचारी हैं,ने दोनों अनुभवी गाइडों के मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक पर्वतारोहण किया। 20 जून की सुबह 10–40 बजे माउंट त्रिशूल चोटी पर सफलतापूर्वक तिरंगा फहराते हुए शिखर विजय प्राप्त की। उत्तरकाशी की गंगा व यमुना घाटी के पर्वतारोहियों की दक्षता राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बना रही है। अभियान दल का नेतृत्व भी सौरभ रावत ने किया।

प्रस्तुति : अमन तलवाड़, सह संपादक

करिअर

राजकीय महाविद्यालयों में प्रतियोगी परीक्षा की कोचिंग की तैयारी

प्रो.वी.एन.खाली
निदेशक उच्च शिक्षा

उच्च शिक्षा निदेशक प्रो.वी.एन.खाली के अनुसार उत्तराखंड के राजकीय महाविद्यालयों में पीपीपी मोड कंप्यूटर लैबोरेट्रीज कम टेस्टिंग सेंटर स्थापित होंगे। इनमें विद्यार्थियों को कंप्यूटर कोर्स के साथ ही प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी का अवसर मिलेगा। इसमें अपरान्ह दो बजे तक छात्र और फैकल्टी इन सेंटर का उपयोग कंप्यूटर लैब के रूप में करेंगे,वहीं दो बजे के बाद सेंटर संचालन करने वाली निजी कंपनी इसका व्यवसायिक उपयोग कर पायेगी। जिसमें आईटी ट्रेनिंग प्रोग्राम, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के साथ ही ऑनलाइन कोचिंग कक्षाओं का संचालन इन केन्द्रों में किया जायेगा।

इसके अलावा इन केन्द्रों का उपयोग प्रतियोगी परीक्षा केंद्रों के रूप में भी किया जा सकेगा। इससे दूरस्थ क्षेत्र के छात्रों को अपने घर के नजदीक ऑनलाइन परीक्षा केंद्र उपलब्ध हो पायेंगे।

एक दर्जन से अधिक संस्थाओं के सहयोग से आयोजित हुआ विशाल रक्तदान शिविर

"16 लोगों को मिला आदर्श नागरिक सम्मान-2026"

राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस (1 जुलाई) के अवसर पर देहरादून में 'विचार एक नई सोच' सामाजिक संगठन व उत्तराखंड श्रमजीवी पत्रकार यूनियन के बैनर तले एक दर्जन से अधिक संस्थाओं के सहयोग से विशाल स्वैच्छिक रक्तदान शिविर एवं स्वास्थ्य संवाद का आयोजन किया गया। पी.आर.एस.आई. देहरादून, चैप्टर, **रंत रैबार** संस्था,आकाश शिक्षा एवं सांस्कृतिक विकास समिति,लाईफ केयर पैथोलॉजी सेंटर,उत्तरजन टुडे सेंचुरियन क्लब,रजनी टाइम्स, भविष्य की उड़ान व अमोलाज रेस्टोरेंट ने भी आयोजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। दून अस्पताल ब्लड बैंक की टीम द्वारा 240 यूनिट रक्त संग्रहण किया गया। **यमुनोत्री विधायक संजय डोभाल ने स्वयं रक्तदान कर समाज को सकारात्मक संदेश दिया।** मुख्यमंत्री के अपर सचिव बंशीधर तिवारी ने रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि रक्तदान मानव सेवा का सशक्त माध्यम है। इस अवसर पर देवप्रयाग विधायक विनोद कंडारी,रायपुर विधायक उमेश शर्मा काऊ व टिहरी विधायक भी मौजूद रहे। पीआईबी एवं आरएनयू देहरादून के सहायक निदेशक संजीव सुंदरियाल, दून मेडिकल कॉलेज अस्पताल के एम.एस.डॉ.आर.एस. बिष्ट,एफडीए के सहायक औषधि नियंत्रक डॉ. सुधीर कुमार व अध्यक्ष ललित मोहन जोशी ने रक्तदान के महत्व को रेखांकित किया।

कार्यक्रम में आयोजित स्वास्थ्य संवाद के दौरान विशेषज्ञ चिकित्सकों ने स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न विषयों पर विस्तार से जानकारी दी। संस्था के संरक्षक डॉ.एस.डी.जोशी,डॉ. अमर उपाध्याय, डॉ.उदय शंकर बलूनी व डॉ.अरुण पांडेय ने कहा कि मानव रक्त का कोई विकल्प नहीं है। रक्तदान से किसी प्रकार की शारीरिक कमजोरी नहीं आती। जरूरतमंद लोगों के लिए रक्तदान करना अत्यंत पुण्य का काम है।

आदर्श नागरिक सम्मान–2026

1. डॉ. आर एस बिष्ट, एमएस, दून मेडिकल कॉलेज अस्पताल।
2. डॉ. रमेश कुंवर, अध्यक्ष, प्रांतीय चिकित्सा सेवा संघ। डिप्टी सीएमओ हरिद्वार।
3. डॉ. अमर उपाध्याय, कार्डियोलॉजिस्ट, दून अस्पताल।
4. डॉ. अरूण पांडेय, सीनियर फिजीशियन, दून अस्पताल।
5. डॉ. उदय शंकर बलूनी, गेस्ट्रो सर्जन, बलूनी अस्पताल।
6. डॉ. रचित गर्ग, रेडियोलॉजिस्ट । श्रीनगर मेडिकल कॉलेज।
7. डॉ. अंकित परासर, रेडियोलॉजिस्ट, पराशर पैथोलॉजी सेंटर।
8. एडवोकेट ललित मोहन जोशी, चेयरमैन, सीआईएमएस एंव यूआईएचएमटी ग्रुप ऑफ कॉलेज ।
9. एडवोकेट विकेश सिंह नेगी, आरटीआई के जरिए समाजिक चेतना के क्षेत्र में।
10. श्री मनमोहन भटकोरा, पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए
11. डॉ. तुहिन, स्वास्थ्य विभाग।
12. अनिल सती, सुरेश भट्ट पीआरएस आई संगठन को जनसंपर्क के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मान
13. अनिल वर्मा, सामाजिक कार्यकर्ता, सिविल डिफेन्स।
14. वैभव गोयल, फिल्म निर्माण के क्षेत्र में।
15. डॉ. सुधीर कुमार, सहायक औषधि नियंत्रक, एफडीए, उत्तराखंड।
16. विजय थपलियाल, सचिव मंडी समिति, देहरादून।

प्रस्तुति - प्रो. (डॉ.) के. एल.तलवाड़

श्री गुरु राम राय दरबार साहिब

'आखर' : त्वरित पॉकेट शब्दकोश का लोकार्पण

उत्तराखण्ड की लोकभाषाओं को जन–जन तक पहुँचाने की दिशा में एक अभिनव पहल करते हुए कर्नल (डॉ.) डी.पी. डिमरी एवं उनकी सहयोगी टीमकर्मियों पृथ्वी, सरस्वती, नरेन्द्र, उर्मिला सिंह तथा पूरन ने ऐप आधारित त्वरित पॉकेट शब्दकोश 'आखर' विकसित किया है। श्री दरबार साहिब में आयोजित कार्यक्रम में श्री दरबार साहिब के सज्जादे गद्दीनशीन श्रीमहंत देवेन्द्र दास महाराज ने 11 जुलाई को इसका लोकार्पण करते हुए इसे मातृभाषाओं के संरक्षण और प्रसार की दिशा में दूरदर्शी कदम बताया तथा कर्नल डॉ. डिमरी को शुभकामनाएं दी। हिंदी, अंग्रेजी, गढ़वाली, कुमाऊँनी और जौनसारी को समाहित करने वाला यह डिजिटल शब्दकोश दैनिक संवाद में प्रयुक्त शब्दों, वाक्यांशों और मुहावरों को सहज रूप से समझने तथा अपनाने में सहायक होगा। श्री गुरु राम राय पी.जी. कॉलेज के पूर्व छात्र कर्नल डॉ. डिमरी भारतीय सेना में सेवाएँ देने के साथ भारत सरकार में कौशल एवं उद्यमिता सलाहकार के रूप में भी कार्य कर चुके हैं। उनका विश्वास है कि 'आखर' विश्वभर में बसे उत्तराखण्डियों, प्रवासी भारतीयों तथा नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ेगा और घर–परिवार, सामाजिक समारोहों तथा सांस्कृतिक आयोजनों में स्थानीय भाषाओं के प्रयोग को प्रोत्साहित करेगा। उपयोगकर्ताओं की उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाओं ने इस पहल को नई ऊर्जा प्रदान की है। यह ऐप

सुझावों के लिए खुला रहेगा और शीघ्र ही गूगल प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध होगा। समारोह में श्रीमती रेखा डिमरी भी उपस्थित रहीं। उत्तराखण्ड की भाषा, संस्कृति और शिक्षा के संवर्धन के लिए सक्रिय कर्नल डॉ. डिमरी समय–समय पर आर्थिक रूप से कमजोर मेधावी विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियाँ भी प्रदान करती हैं।

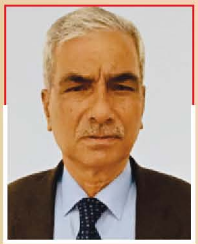

प्रस्तुति – प्रो.वी.एन.बौड़ाई,
सेवानिवृत्त प्राचार्य,
एसजीआरआर पीजी कालेज,
देहरादून

उपलब्धि | डॉ. एस.डी.जोशी लाइफटाइम एचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित

पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्री की ओर से 24 जून को राजधानी दून में फार्मा, हेल्थकेयर एवं आयुष कॉन्क्लेव आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में उत्तराखंड के वरिष्ठ फिजिशियन डॉ.एस.डी.जोशी को प्रदेश के आयुष मंत्री मदन कौशिक ने लाइफटाइम टाइम एचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया। डॉ. जोशी को यह प्रतिष्ठित अवार्ड प्रदेश में स्वास्थ्य के क्षेत्र में सराहनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया। डॉ.जोशी अब तक गढ़वाल के विभिन्न दूरस्थ क्षेत्रों में 70 से अधिक फ्री हेल्थ कैंप आयोजित कर चुके हैं। इन निःशुल्क स्वास्थ्य शिविरों में रोगियों की ब्लड शुगर और ईसीजी आदि की जांच की गई। जरूरतमंद निर्धन रोगियों को आवश्यक दवाएं भी निःशुल्क दी गईं।

प्रत्येक शिविर में औसतन 200 रोगियों की जांच की गई। डॉ.जोशी की स्वैच्छिक रक्तदान शिविरों के आयोजन में भी सक्रिय भागीदारी रहती है। उल्लेखनीय है कि डॉ.एस.डी.जोशी 'साईं सृजन पटल' मासिक पत्रिका के सलाहकार मंडल के वरिष्ठ और स्थायी सदस्य भी हैं। पटल की ओर से उन्हें इस प्रतिष्ठित सम्मान पाने के लिए अनेकानेक शुभकामनाएं।

प्रस्तुति - प्रो. (डॉ.) के. एल.तलवाड़

पुस्तक समीक्षा | कविता संग्रह 'स्मृति' : जीवन के यथार्थ का प्रतिबिंब

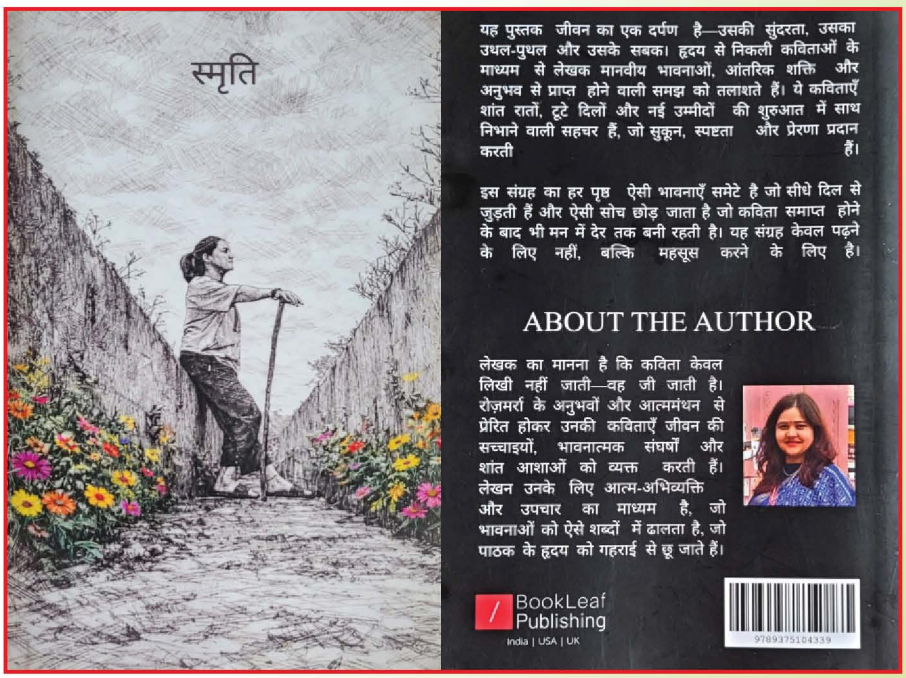

युवा कवयित्री साक्षी डोभाल का नवीनतम कविता संग्रह 'स्मृति' उनके जीवन के अनुभवों को शब्दों में पिरोने का एक सार्थक प्रयास है। बुकलीफ पब्लिशिंग से प्रकाशित 40 पृष्ठों की इस पुस्तिका में 21 कविताएं संकलित हैं। सही मायनों में यह लघु कविता संग्रह मानव जीवन के यथार्थ को स्वीकार करने और त्याग के बीच निरंतर प्रवाहित यात्रा का साक्ष्य है। कवयित्री की दृष्टि में कविता की कोई पंक्ति यदि पाठक के चित्त में एक मौन विचार जगा दे, तो यही इसकी सार्थकता है।

कविता समाधान नहीं देती,वह केवल चेतना को जाग्रत करती है। कविता संग्रह की 'खोज', 'पहला पग', 'मैं चल पड़ा हूं', 'कुछ तो बता' और 'स्वयं की समीक्षा' कविताएं हृदयस्पर्शी हैं। कवयित्री जब लिखती है कि 'मैं राख से फिर उठ खड़ा होऊँगा, पर तुमसे कोई उम्मीद न लगाऊंगा।

मैं जीने की नई वजह ढूंढ़ लाऊँगा, पर तुम्हारी शर्तों पर कभी न जी पाऊँगा।' तो आभास होता है कि मनुष्य की इच्छाशक्ति ही उसकी असली प्रेरक शक्ति है।

रंवाई घाटी के 65 गांवों की आस्था से जुड़ा

देवराणा का मेला : डांडा की जातर

रुद्रेश्वर देवता रंवाईघाटी के 65 गाँव के आराध्य देव हैं, जिनके नाम को घर–घर में पूजा जाता है। लोगों की अपने आराध्य देव के प्रति गहरी आस्था है, घर का कोई भी शुभ कार्य हो, लोग अपने आराध्य देव की अनुमति मिलने पर ही कार्य का शुभारम्भ करते हैं। अपने आराध्य के प्रति आस्था रखने वाले लोगों की जब भी कोई मनोकामना पूर्ण होती है तो वह खुश मन से श्रद्धानुसार सोना भेंट करते हैं।

देवराणा का मेला (डांडा की जातर)

आसाढ़ माह के मूल नक्षत्र में रुद्रेश्वर देवता मन्दिर के गर्भ गृह से बाहर निकलते है और अपने अनुयायियों को दर्शन देते हैं। गर्भ गृह से बाहर निकलने के एक दिन बाद देवराणा का मेला आयोजित होता है, जिसे स्थानीय भाषा में डांडा की जातर कहा जाता है, जिसे अब राजकीय मेला घोषित किया गया है। देवराणा देवदार के घने जंगलो के बीच स्थित स्थान है, जहां रुद्रेश्वर देवता का प्राचीन मन्दिर है जो समुद्र तल से करीब 2200 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यह स्थान अभी मोटर मार्ग से नही जुड़ पाया है, इसके बावजूद भी हजारों श्रद्धालु पैदल वहां पहुंचते हैं। यह मेला 65 गाँव का सामूहिक मेला होता है। जिसमे रंवाईघाटी की वल्ली और पल्ली मुंगरसंती पट्टी सहित, बड़कोट, कमल सिराईं, गोडर ,खाटल, टिहरी के जौनपुर और जौनसार बावर क्षेत्र के हजारों लोग प्रतिभाग कर देव दर्शन कर मन्नते मांगते हैं। देवराणा मेले की खास विशेषता यह है कि इस दिन देवता का देव माली मन्दिर के ऊपर बने लकड़ी के शेर की पीठ पर बैठ कर श्रद्धालुओं को तीन बार मूर्ति के दर्शन करवाता है, उतनी ही बार मूर्ति को दूध से अभिषेक करवाया जाता है।

मेलों की श्रृंखला

देवराणा मेले के दिन से ही रंवाई घाटी में मेलों की श्रृंखला शुरू हो जाती है जो करीब एक माह तक चलती है। देव डोली एक वर्ष वल्ली मुंगरसन्ती और दूसरे वर्ष पल्ली

मुंगरसन्ती पट्टी में गाँव–गाँव दर्शनार्थ घूमती है और प्रत्येक गाँव में मेले का आयोजन होता है, जिसमें लोग अपने आराध्य को हरियाली,श्रीफल, चुनरी, चढ़ा कर मन्नतें मांगते हैं। साथ ही कई तरह के पकवान बना कर भोग चढ़ाते हैं।

चार थान (मन्दिर)

रुद्रेश्वर देवता के देवलसारी, कंडाऊं,बजलाड़ी और तीयां चार थान (मन्दिर) हैं जिनमें बारी – बारी से एक वर्ष के लिए मन्दिर के गर्भ गृह में मूर्ति को स्थापित किया जाता है। जिस थान से जो गाँव जुड़े होंगे, वह एक वर्ष तक देवता की पूजा और सभी तरह के देव कार्य करेंगे। बजलाड़ी और तीयां में संकित थपलियाल,कंडाऊं में अमन सेमवाल और देवलसारी थान में अमित नौटियाल, सुनील नौटियाल नई पीढ़ी के देव माली हैं, जिन पर देवता अवतरित होता है।

पांच देव मूर्तियों के दर्शन

रुद्रेश्वर देवता जब मन्दिर के गर्भ गृह से बाहर निकलते हैं तो श्रद्धालु एक साथ रुद्रेश्वर महाराज, बाबा बौखनाग, धर्म राज युधिष्ठिर,महासू महाराज और माता नाटेश्वरी के दर्शन करते हैं। एक साथ पांच देव मूर्तियों के दर्शन कर लोग प्रसन्नता व्यक्त करते हैं। देव डोली जब गाँव गाँव–गाँव घूमती है, तो पांच देव मूर्तियों को देव डोली के अंदर रिंगाल की कंडी में रखा जाता है जिन्हें गाँव में होने वाले मेले में पूजा के दौरान दर्शनार्थ रखा जाता है ।

प्रस्तुति – विजयपाल रावत,
वरिष्ठ पत्रकार, नौगांव,
उत्तरकाशी

तंबाकू : मानवता के भविष्य पर मंडराता सबसे बड़ा रोके जा सकने वाला खतरा

तंबाकू आज केवल एक नशा नहीं, बल्कि वैश्विक स्वास्थ्य संकट, सामाजिक विघटन और आर्थिक क्षति का सबसे बड़ा कारण बन चुका है। आधुनिकता, उपभोक्तावाद और बाजारवाद के इस दौर में मनुष्य स्वयं अपने स्वास्थ्य के लिए सबसे बड़ा खतरा बनता जा रहा है। तंबाकू का बढ़ता उपयोग न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है, बल्कि परिवारों, समाज और राष्ट्र की प्रगति पर भी गंभीर प्रभाव डाल रहा है। कैंसर आज विश्व स्वास्थ्य के समक्ष सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। वर्ष 2025 में विश्वभर में लगभग 2 करोड़ नए कैंसर मामलों के सामने आने का अनुमान है, जबकि भारत में प्रतिवर्ष लगभग 16 लाख नए कैंसर रोगियों की पहचान होने की संभावना है। चिंताजनक तथ्य यह है कि भारत में होने वाले लगभग 40 से 50 प्रतिशत कैंसर मामलों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध तंबाकू सेवन से है। इस दृष्टि से तंबाकू कैंसर का सबसे बड़ा रोके जा सकने वाला कारण माना जाता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने वर्ष 2026 के लिए 'Unmasking the Appeal – Countering Nicotine and Tobacco Addiction' विषय निर्धारित किया है। यह विषय स्पष्ट करता है कि तंबाकू और निकोटिन उद्योग किस प्रकार आकर्षक पैकेजिंग, विभिन्न फ्लेवर, डिजिटल प्रचार और आधुनिक उत्पादों के माध्यम से युवाओं तथा किशोरों को लत के जाल में फंसा रहे हैं। विश्वभर में करोड़ों किशोर पहले ही तंबाकू और ई–सिगरेट के संपर्क में आ चुके हैं तथा कई देशों में वेपिंग की प्रवृत्ति युवाओं में तेजी से बढ़ रही है। तंबाकू का सबसे बड़ा छल यह है कि यह शरीर को धीरे–धीरे नष्ट करता है। यह कोई अचानक दिखाई देने वाला रोग नहीं, बल्कि एक 'मूक महामारी' (Silent Epidemic) है। व्यक्ति वर्षों तक स्वयं को स्वस्थ समझता रहता है, जबकि भीतर कैंसर, हृदय रोग, फेफड़ों की गंभीर बीमारियां, स्ट्रोक तथा रक्तवाहिनियों का क्षरण निरंतर चलता रहता है। चिकित्सकों के अनुसार धूम्रपान, बीड़ी, सिगरेट, गुटखा, खैनी, जर्दा, पान मसाला तथा ई–सिगरेट सभी किसी न किसी रूप में शरीर के लिए घातक हैं। केवल उत्पाद बदल लेने से स्वास्थ्य जोखिम समाप्त नहीं होता।

भारत जैसे विकासशील देश में यह संकट और अधिक गंभीर रूप धारण कर चुका है। यहां तंबाकू केवल सिगरेट तक सीमित नहीं है, बल्कि गुटखा, बीड़ी, खैनी और अन्य चबाने वाले उत्पादों के रूप में गांव–गांव तक फैला हुआ है। दुखद तथ्य यह है कि अब युवा वर्ग और महिलाएं भी इसकी चपेट में तेजी से आ रहे हैं। कैंसर विशेषज्ञों के अनुसार मौखिक कैंसर और फेफड़ों के कैंसर के मामलों में लगातार वृद्धि हो रही है,

जिनका मुख्य कारण तंबाकू सेवन है। भारत विश्व में ओरल कैंसर की राजधानी बनता जा रहा है, और इसका बड़ा कारण चबाने वाले तंबाकू उत्पाद हैं।

तंबाकू केवल व्यक्ति को नहीं मारता, बल्कि पूरे परिवार की खुशियां छीन लेता है। एक गरीब परिवार का कमाने वाला सदस्य जब तंबाकू की लत का शिकार होता है, तो उसकी आय का एक बड़ा हिस्सा नशे पर खर्च होने लगता है। बाद में वही व्यक्ति गंभीर बीमारियों से जूझता है और परिवार आर्थिक तथा मानसिक संकट में डूब जाता है। इस प्रकार तंबाकू गरीबी, बीमारी और सामाजिक असुरक्षा का दुष्चक्र तैयार करता है। सबसे चिंताजनक तथ्य यह है कि तंबाकू उद्योग अब बच्चों और युवाओं को अपना सबसे बड़ा लक्ष्य बना चुका है। आकर्षक रंग, स्वादयुक्त उत्पाद, सोशल मीडिया प्रचार , तथाकथित आधुनिक जीवनशैली और "कूल" दिखने की संस्कृति के माध्यम से नई पीढ़ी को निकोटिन की गिरफ्त में लाने का प्रयास किया जा रहा है। उद्योग लगातार यह भ्रम पैदा करता है कि नए उत्पाद पारंपरिक तंबाकू की तुलना में अधिक सुरक्षित हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि निकोटिन किसी भी रूप में लत और स्वास्थ्य जोखिम का कारण बनता है। आज आवश्यकता केवल जागरूकता अभियानों की नहीं, बल्कि ठोस सामाजिक और नीतिगत हस्तक्षेप की है। विद्यालयों और महाविद्यालयों में नशा विरोधी शिक्षा को प्रभावी बनाया जाए। सार्वजनिक स्थलों पर तंबाकू निषेध कानूनों का कठोरता से पालन हो। फिल्मों, ओटीटी प्लेटफॉर्म और डिजिटल माध्यमों में तंबाकू के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रचार पर नियंत्रण स्थापित किया जाए। साथ ही, नशा मुक्ति और पुनर्वास सेवाओं को ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचाने के लिए विशेष प्रयास किए जाने चाहिए। समाज को भी यह समझना होगा कि तंबाकू केवल व्यक्तिगत पसंद का विषय नहीं, बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य का प्रश्न है। निष्क्रिय धूम्रपान (Passive Smoking) भी उतना ही खतरनाक है जितना स्वयं धूम्रपान करना। परिवार, मित्र, महिलाएं और बच्चे सभी इसके दुष्प्रभावों की चपेट में आते हैं। इसलिए तंबाकू के विरुद्ध संघर्ष केवल सरकार का दायित्व नहीं, बल्कि पूरे समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है।

जीवन का वास्तविक आनंद नशे में नहीं, बल्कि स्वस्थ शरीर, स्वच्छ वातावरण और जागरूक समाज में है। यदि आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित भविष्य देना है, तो हमें तंबाकू उद्योग की चमकदार परतों के पीछे छिपे विनाशकारी सत्य को पहचानना होगा। यह केवल स्वास्थ्य का प्रश्न नहीं, बल्कि मानवता के भविष्य का प्रश्न है।

आज आवश्यकता एक सामूहिक संकल्प की है।

"तंबाकू मुक्त युवा, तंबाकू मुक्त भारत और स्वस्थ मानवता।"

क्योंकि तंबाकू से होने वाले अधिकांश कैंसर रोके जा सकते हैं, बशर्ते हम समय रहते जागरूक हों, दूसरों को जागरूक करें और नशामुक्त समाज के निर्माण में अपनी सक्रिय भूमिका निभाएं।

प्रस्तुति : डॉ. दीपक सुंदरियाल
सह आचार्य, कैंसर चिकित्सा एवं रुधिर विज्ञान विभाग,एम्स ऋषिकेश

गढ़वाली फिल्म अभिनेता बृजमोहन वेदवाल की 40 वर्षों की अभिनय यात्रा

रंगमंच व अभिनय के सशक्त हस्ताक्षर, प्रखर मंच संचालक बृजमोहन वेदवाल की चालीस वर्षों से अधिक की अभिनय यात्रा में उनकी कला-साधना, संघर्ष, संस्मरणों और सांस्कृतिक सरोकारों पर केन्द्रित साक्षात्कार प्रस्तुत कर रहे हैं साईं सृजन पटल सलाहकार मण्डल के सदस्य डॉ. अनूप वीरेन्द्र कठैत।

सृजन पटल– वेदवाल जी नमस्कार! 'साईं सृजन पटल' मंच पर आपका सादर अभिनन्दन है।

बृजमोहन वेदवाल– नमस्कार ! आपके इस मधुर निमन्त्रण के लिए आभार।

प्रश्न – अपने बचपन और पारिवारिक परिवेश के बारे में कुछ बताइए। अभिनय की ओर आपका झुकाव कैसे हुआ ?

उत्तर – मैं उत्तराखंड के एक छोटे गांव पंचूर, एकेश्वर ब्लॉक पौड़ी गढ़वाल के एक सामान्य परिवार से हूं। बचपन गांव मे ही बीता वहीं से प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त कर आगे की पढ़ाई के लिए कोटद्वार चला गया था। सात भाई बहनों में दूसरे नंबर पर था। स्कूल में वार्षिकोत्सव में नाटक होते थे लेकिन रोल नहीं मिला। बस फिर क्या था कला के प्रति और भी आकर्षण हो गया और लग गया अपने मन की मुराद पूरी करने में। वर्तमान में मैं परिवार साहित दिल्ली में निवासरत हूं।

प्रश्न – रंगमंच और अभिनय की दुनिया में आपका पहला कदम कब और कैसे पड़ा ?

उत्तर – रोजगार हेतु दिल्ली आ गया, जहाँ गढ़वाली नाटकों के जनक स्व.ललितमोहन थपलियाल जी से मुलाकात हुई और उन्होंने मुझे अपने नाटक में शामिल कर लिया।

प्रश्न – आपके जीवन का वह पहला क्षण कौन–सा था, जब आपने महसूस किया कि अभिनय ही आपकी जीवन–यात्रा का उद्देश्य है ?

उत्तर – सन् 1983 में जब मुझे गढ़वाली नाटक 'अछरयू कु ताल' में डेढ़ मिनट का रोल मिला और एक महीने तक रिहर्सल पर जाता रहा। थपलियाल जी बहुत प्रभावित हुए और कहा तुम कला मत छोड़ना। बस फिर क्या था इसके पीछे लग ही गया।

प्रश्न–गढ़वाली फिल्मों में आपका प्रवेश कैसे हुआ ?

उत्तर – बात 1985 की होगी, थपलियाल जी के गढ़वाली नाटक 'चमत्कार' का मंचन चल रहा था, वहीं 'कुटुम' फिल्म के निर्देशक नागेंद्र बिष्ट जी नाटक देख रहे थे। उन्हें इस फिल्म के लिए बतौर हीरो एक चेहरा चाहिए था। उन्होंने संपर्क किया और फिल्म में पहली ही मुलाकात में नायक की भूमिका मिल गई।

प्रश्न – आपने अपने अभिनय जीवन में अनेक किरदार निभाए हैं। कौन–सा पात्र आज भी आपके व्यक्तित्व का हिस्सा बनकर आपके साथ चलता है और क्यों ?

उत्तर – मेरी स्वरचित गढ़वाली फिल्म 'यकुलांस' में सूबेदार की भूमिका और गढ़वाली नाटक 'चमत्कार' में नौकर नत्थू की भूमिका आज भी मेरे मन में रची बसी है।

प्रश्न –गत वर्ष रवि ममगाई द्वारा निर्देशित चर्चित फिल्म 'मिशन देवभूमि' में आपका पिता का किरदार 'शिवचरण' को दर्शकों से खूब सराहना मिली। इस किरदार का अनुभव बतायें?

उत्तर – मिशन देवभूमि अपने आप में अनूठी फिल्म है। उत्तराखंडी समाज में जो जिहाद पनप रहा है उसे निर्देशक ने

बेबाकी से प्रस्तुत किया है। मुझे नायक के पिता की भूमिका मिली, बहुत जटिल अभिनय था, चुनौती थी लेकिन निर्देशक की व साथियों से मिली हौसला अफजाई से अभिनय निखर ही गया।

प्रश्न – आज की युवा पीढ़ी तेजी से डिजिटल माध्यमों की ओर बढ़ रही है। ऐसे समय में गढ़वाली रंगमंच और सिनेमा को जीवित एवं प्रासंगिक बनाए रखने के लिए क्या किया जाना चाहिए ?

उत्तर – प्रश्न बहुत अच्छा है। जहाँ तक मैं समझ रहा हूं, दर्शक डिजिटल दुनिया में कितना भी मस्त हो, लेकिन थिएटर में बैठकर नाटक और फिल्म देखने का आनंद ही कुछ और है। हां!ये जरूर है कि हमें एक नई तैयारी के साथ आधुनिक तकनीक से जुड़ना आवश्यक है। पुरानी संस्कृति व आधुनिक संस्कृति का मिला–जुला प्रस्तुतीकरण हो। अभी हाल ही में मई 2026 में दिल्ली स्थित हाई हिल्लस ग्रुप द्वारा 1975 का स्व. राजेंद्र धस्माना जी का नाटक 'अर्धग्रामेश्वर' का मंचन हुआ, जिसका निर्देशन मैंने ही किया। वहां तीन पीढ़ी एक साथ आनंद ले रही थीं। समझ रहें थे कि 51 साल पहले हम क्या थे और आज कहाँ हैं।

प्रश्न – आप अस्सी के दशक से थिएटर कर रहे हैं, एक रंगकर्मी के रूप में शुरुआती संघर्ष क्या रहे ?

उत्तर – मैं कभी कलाकार नहीं बनना चाहता था, लेकिन मन में आया कि यदि मैं अपने पहाड़ के लिए कुछ करूं तो क्या माध्यम हो। परिवार की जिम्मेदारी, हाथ खाली है। 175 रुपये महीना तनख्वाह तार–तार हो जाती थी। मां को मनीऑर्डर भेजना, मकान मालिक को शिकायत न आने देना, राशन, रिहर्सल में जाना,भूखे पेट रात 11बजे घर आना, न जाने क्या–क्या देखना पड़ा, पता नहीं समय कैसे बीत गया।

प्रश्न – आपके लम्बे रंगकर्म में संघर्ष, अभाव और अस्वीकार के अनेक दौर आए होंगे। वह कौन–सा दौर था, जब कलाकार बृजमोहन वेदवाल सबसे अधिक टूटे, और फिर स्वयं को कैसे पुनः खड़ा किया ?

उत्तर – इस तरह के कई दौर आये लेकिन शुरुआत में ऐसा दौर आया कि क्या बताऊं! बात 1985 की है, मैं 'कुटुम' फिल्म की शूटिंग हेतु दस दिन के लिए गढ़वाल गया था, लेकिन करते–करते एक महीना लग गया। बनिए की नौकरी करता था जब वापस आया तो नौकरी से निकाल दिया गया। जेब मे ढेला तक नहीं, लोगों से कर्जा लेने लगा, दो महीने बीत गए कहीं नौकरी नहीं।

बड़ी मुश्किल से उसी बनिए ने कम पैसे में फिर रखा मैंने सोच लिया कि अब कभी नाटक–फिल्म नहीं करूंगा। फिर सरकारी नौकरी की तैयारी की और पोस्ट ऑफिस में लग गया और वापस फिर वहीं आ गया, जो रास्ता मैंने चुना कि पहाड़ की सेवा करनी है।

प्रश्न – लोकभाषा और लोकसंस्कृति के संरक्षण में रंगमंच और फिल्मों की क्या भूमिका है ?

उत्तर–किसी भी प्रदेश की पहचान वहां की बोली– भाषा खानपान रीति– रिवाज से होती है। आज उत्तराखंड से पलायन बदस्तूर जारी है। भाषा पीछे छूटती जा रही है, बच्चे अपनी संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं, ऐसे में रंगमंच व फिल्म ही एक सशक्त माध्यम है। दिल्ली में रहकर मैं कुछ साथियों के साथ गढ़वाली कक्षाएं चलाता हूं। साथ ही इंग्लैण्ड व अन्य प्रवासी उत्तराखण्डियों के लिए भी समय–समय पर ऑनलाईन भाषा शिक्षण कर रहे हैं।

प्रश्न – गढ़वाली फिल्मों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने के लिए किन प्रयासों की आवश्यकता है ?

उत्तर – हमारी गढ़वाली फिल्मों को राष्ट्रीय स्तर पर लाने के लिए बहुत कुछ करना बाकी है, काम प्रोफेशनल होना जरुरी है शौकिया नहीं। आर्थिक संसाधनों के उपाय पर भी विचार होना चाहिए। सबसे पहले कहानी के कंटेंट में दम होना चाहिए।

प्रश्न – गढ़रत्न नेगी जी के विख्यात गीत 'स्याळी रामदेई' में नायक के तौर पर आपको नयी पीढ़ी ने भी पसंद किया। क्या अनुभव रहा ?

उत्तर – मैं इस गीत की पूरी टीम व विशेष रूप से नेगी जी का आभारी हूं जिन्होंने मुझे इस लायक समझा। इस गीत ने मुझे एक विशेष पहचान दी। मैं जहाँ भी जाता हूं, मंचों पर लोगों की यही डिमांड रहती है।

सृजन पटल– वेदवाल जी आप स्वयं में एक एक्टिंग संस्थान हैं, ये कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। अपना अनुभव साझा करने व 'सृजन पटल' को अपना कीमती समय देने के लिए धन्यवाद। साथ ही आपके आने वाले सभी प्रोजेक्ट्स के लिए अनेक शुभकामनायें।

बृजमोहन वेदवाल– ये बस दर्शकों का प्रेम है और कुछ नहीं। मुझे आमंत्रित करने के लिए आपका भी बहुत–बहुत धन्यवाद। नमस्कार !

सजग इंडिया के अध्यक्ष ललित जोशी को मिला 'नशामुक्त मित्र अवॉर्ड'

सीआईएमएस एंड यूआईएचएमटी ग्रुप ऑफ कॉलेज देहरादून एवं सजग इंडिया के अध्यक्ष शिक्षाविद ललित जोशी को भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा प्रतिष्ठित 'नशामुक्त अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया। राज्य स्तरीय सम्मान समारोह का आयोजन देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार में 26 जून को हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ.वीरेंद्र कुमार थे। उल्लेखनीय है कि सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा 17 जून से 26 जून तक 'नशामुक्त भारत सप्ताह' का आयोजन किया गया था। ललित जोशी को यह सम्मान उनके द्वारा पिछले 15 वर्षों से अधिक समय से स्कूलों,महाविद्यालयों एवं समाज के विभिन्न वर्गों के बीच नशे के विरुद्ध जन-जागरूकता अभियान चलाने तथा युवाओं को नशामुक्त जीवन के लिए प्रेरित करने में दिए गए उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया। उनके द्वारा अब तक 1500 से अधिक शिक्षण संस्थाओं में 8 लाख से अधिक छात्र-छात्राओं को युवा संवाद के माध्यम से जागरूक किया गया है। राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त करने पर ललित जोशी ने कहा कि यह सम्मान केवल मेरा नहीं,बल्कि सजग इंडिया से जुड़े सभी स्वयंसेवकों,शिक्षकों एवं युवाओं के सामूहिक प्रयासों का सम्मान है।

प्रस्तुति - प्रो. (डॉ.) के. एल.तलवाड़

स्वाद पहाड़ का

गढ़भोज गौरव सम्मान मिला

'रंवाई रसोई' के माध्यम से पहाड़ी व्यंजन बना रहीं - जमुना रावत

बड़कोट तहसील के मणपा कोटी गांव में साधारण परिवार में जन्मी रंवाई की बेटी जमुना रावत डेढ़ दशक से उत्तराखण्ड ही नहीं बल्कि देश के कई राज्यों में प्रवासित उत्तराखण्डियों को रंवाई के पारम्परिक व्यंजनों का स्वाद चखा कर बढ़ावा दे रही हैं। घर पर विशुद्ध रूप से तैयार पहाड़ी व्यंजनों को वह व्यवसाय के लिए नहीं बल्कि उनकी पहचान को कायम रखने के लिए कार्य कर रही हैं। जमुना रावत सांस्कृतिक महोत्सवों और मेलों में **'रंवाई रसोई'** के नाम का स्टाल लगा कर सीड़े, अस्के, डिन्डके,कोदे की रोटी,गहत भरी रोटी, दाल के पकोड़े, बड़ील, झंगोरे की खीर,पतेड़, तिल कुचाई, चुल्लू की चटनी सहित कई तरह के पहाड़ी व्यंजनों का स्वाद चखा कर बढ़ावा दे रही हैं। पारम्परिक व्यंजनों की पहचान को कायम रखने और उन्हें बढ़ावा देने की मुहिम में जुटी रंवाई की बेटी जमुना रावत को विभिन्न मंचों से सम्मानित किया जा चुका है। क्षेत्र में **'रंवाई रसोई'** से उनकी लोकप्रियता बढ़ी है। जमुना रावत का कहना है कि स्थानीय लोग अपने पारम्परिक व्यंजनों के स्वाद को भूल कर चाइनीज फूड की तरफ दौड़ रहे हैं, जो स्वास्थ्य के लिए नुकसान दायक है। अपने पारम्परिक व्यंजनों की पहचान को कायम रखने और बढ़ावा देने के लिए, घर पर शुद्ध उत्पादों से पारम्परिक व्यंजन तैयार करने की उनकी मुहिम जारी रहेगी।

प्रस्तुति - अरविंद थपलियाल,
वरिष्ठ पत्रकार, नौगांव- उत्तरकाशी

गंगा किनारे सिक्के ढूंढने वाले बच्चों के जीवन पर बनी फिल्म

'एक बहता जीवन हरिद्वार में' इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में हुई पुरस्कृत

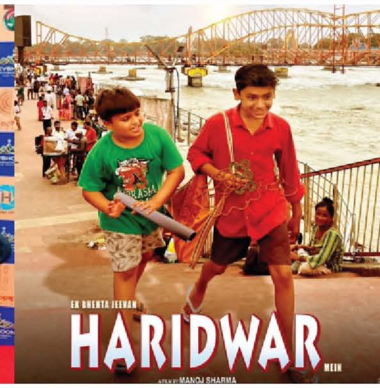

गंगा किनारे सिक्के ढूंढकर जीवन–यापन करने वाले बच्चों की संघर्ष गाथा पर आधारित फिल्म 'एक बहता जीवन हरिद्वार में' को हिमाचल प्रदेश के मंडी में आयोजित 'देवभूमि अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल' में 'बेस्ट चिल्ड्रंस फिल्म' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मनोज शर्मा द्वारा लिखित और निर्देशित, प्राची मूवीज के बैनर तले बनी इस फिल्म को समीक्षकों और दर्शकों ने खूब सराहा। हरिद्वार में तीर्थ यात्रियों और श्रद्धालुओं द्वारा गंगा स्नान व पूजन के उपरांत भेंट स्वरूप गंगा में सिक्के डाले जाते हैं। निर्धन परिवार के कुछ बच्चे इन्हीं सिक्कों को निकालने के लिए गंगा में डुबकी लगाते दिख जाते हैं। ऐसे बच्चों का बचपन इन्हीं सिक्कों को बटोरने में व्यतीत हो जाता है। इस काम के लिए भी उन्हें बहुत जद्दोजहद करनी पड़ती है। इसी संघर्ष को निर्देशक ने बहुत मार्मिक ढंग से इस फिल्म में पिरोया है।

फिल्म में हेमंत पांडे,विजेंद्र काला,हरवीर यादव और अक्षय जैसे कलाकारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। फिल्म की जान बने बाल कलाकार मास्टर सक्षम,मास्टर अनंत उर्फ मोनू और मास्टर चीकू का अभिनय विशेष रूप से सराहा गया। उत्तराखंड पुलिस में तैनात हेड कांस्टेबल अक्षय के बेटे अनंत (मोनू) के स्वाभाविक अभिनय ने सबका ध्यान खींचा। उल्लेखनीय है कि राज्य सरकार की फिल्म नीति के कारण अब उत्तराखंड के स्थानीय कलाकारों को भी बड़ा मंच मिल रहा है। यहां की खूबसूरत प्राकृतिक लोकेशन की वजह से फिल्मकार यहां फिल्म शूटिंग के लिए आ रहे हैं। उभरते बाल कलाकार अनंत (मोनू) जल्द ही दो नई फिल्मों 'अपहरण –2' और 'मिशन : मासूम शिकार' में भी नजर आयेंगे।

प्रस्तुति - प्रो. (डॉ.) के. एल.तलवाड़

घोषणा

वर्ष 2023 के ऐतिहासिक रेस्क्यू ऑपरेशन पर आधारित

'सिल्क्यारा' पर फिल्म बनायेंगे आमिर खान

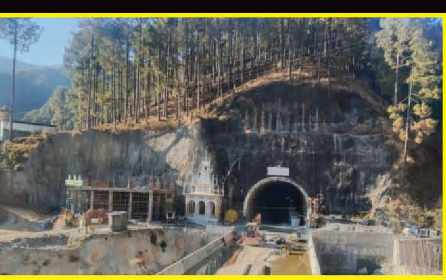

अभिनेता आमिर खान ने 10 जुलाई को मुंबई में अपनी नई प्रोडक्शन फिल्म 'सिल्क्यारा 41' की घोषणा की है। यह फीचर फिल्म वर्ष 2023 में उत्तराखंड के उत्तरकाशी जनपद की सिल्क्यारा–बड़कोट सुरंग में फंसे 41 श्रमिकों के बचाव अभियान पर आधारित है। यह फिल्म आमिर खान प्रोडक्शंस, ऑस्ट्रेलिया की माइंड ब्लोइंग फिल्म्स और निर्देशक कबीर खान फिल्म्स के संयुक्त निर्माण में बन रही है। ऑस्ट्रेलियाई पटकथा लेखक एंड्रयू अनास्तासियोस द्वारा लिखी गई 'सिल्क्यारा 41' फिल्म उस अभियान को दर्शाएगी, जिसमें कई एजेंसियों ने मिलकर बचाव कार्य किया था। इसमें निर्माणाधीन सुरंग में दो सप्ताह से अधिक समय तक फंसे सभी 41 श्रमिकों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया था। अभिनेता–निर्माता आमिर खान ने कहा कि सिल्क्यारा सुरंग बचाव अभियान की कहानी ने मुझे काफी प्रभावित किया। यह असंभव जैसी परिस्थितियों के बीच साहस,दृढ़ता, सूझ–बूझ और मानवता की सच्ची कहानी है।

युल्ला कांडा मंदिर : विश्व का सर्वाधिक ऊँचाई पर स्थित श्रीकृष्ण मंदिर

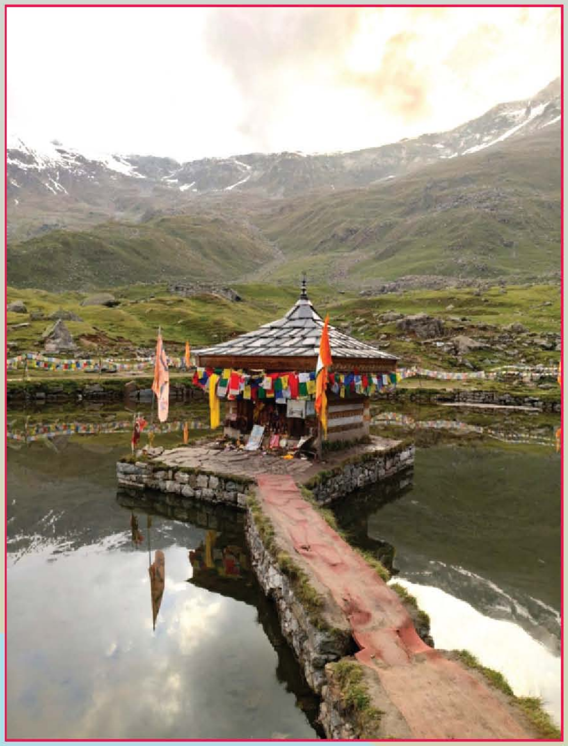

हिमालय की ऊँचाइयों में कुछ स्थान ऐसे होते हैं जहाँ पहुँचकर लगता है कि प्रकृति स्वयं ध्यानमग्न होकर बैठी है। हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जनपद में स्थित युल्ला कांडा ऐसा ही एक अद्भुत स्थल है। यह केवल एक पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि आस्था, प्रकृति और सांस्कृतिक विरासत का ऐसा संगम है, जहाँ पहुँचकर मनुष्य स्वयं को प्रकृति के अधिक निकट और जीवन के अधिक गहरे अर्थों के करीब महसूस करता है। युल्ला कांडा की यात्रा मेरे लिए केवल एक पर्वतीय भ्रमण नहीं बल्कि एक ऐसा अनुभव था, जिसने मुझे हिमालय को देखने और समझने का दृष्टिकोण बदल दिया। समुद्र तल से लगभग 3,895 मीटर की ऊँचाई पर स्थित इस स्थान तक पहुँचने के लिए दुर्गम पहाड़ी मार्गों से होकर गुजरना पड़ता है। जैसे-जैसे यात्रा आगे बढ़ती है, वैसे-वैसे सड़कें पीछे छूटती जाती हैं और प्रकृति का विराट स्वरूप सामने आने लगता है। मार्ग में फैले हरे-भरे बुग्याल, रंग-बिरंगे जंगली फूल, ऊँचे देवदार और दूर-दूर तक दिखाई देती हिमाच्छादित पर्वत श्रृंखलाएँ मन को मंत्रमुग्ध कर देती हैं। पहाड़ों के बीच बहती शीतल हवाएँ और पक्षियों की मधुर ध्वनियाँ ऐसा वातावरण निर्मित करती हैं, मानो प्रकृति स्वयं यात्रियों का स्वागत कर रही हो।

कठिन चढ़ाई के बावजूद थकान का एहसास कम और उत्साह अधिक महसूस होता है। कई घंटों की पदयात्रा के बाद जब युल्ला कांडा झील का प्रथम दर्शन हुआ, तो वह दृश्य अविस्मरणीय था। शांत जलराशि के मध्य स्थित भगवान श्रीकृष्ण का मंदिर हिमालयी आकाश और पर्वतों की पृष्ठभूमि में किसी दिव्य चित्र की भाँति प्रतीत हो रहा था। झील का निर्मल जल आसपास की चोटियों का प्रतिबिंब अपने भीतर समेटे हुए था। उस क्षण ऐसा लगा मानो समय ठहर गया हो और समूचा वातावरण किसी आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण हो। स्थानीय लोगों के अनुसार यह मंदिर विश्व का सबसे ऊँचाई पर स्थित श्रीकृष्ण मंदिर माना जाता है। क्षेत्र में प्रचलित लोककथाएँ इसे महाभारत काल और पांडवों से जोड़ती हैं। यद्यपि इन कथाओं के ऐतिहासिक प्रमाणों पर अलग-अलग मत हो सकते हैं, किंतु यह निर्विवाद है कि इन मान्यताओं ने स्थानीय समाज की सांस्कृतिक चेतना को पीढ़ी-दर-पीढ़ी जीवित रखा है। जन्माष्टमी के अवसर पर यहाँ लगने वाला मेला केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि क्षेत्रीय संस्कृति और सामुदायिक एकता का उत्सव भी है। युल्ला कांडा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ प्रकृति और अध्यात्म एक-दूसरे से अलग नहीं दिखाई देते। झील, पर्वत, घास के मैदान और मंदिर मिलकर एक ऐसा वातावरण रचते हैं जहाँ मन स्वतः शांत हो जाता है। आधुनिक जीवन की आपाधापी, शोर और तनाव से दूर यह स्थान आत्ममंथन का अवसर प्रदान करता है। यहाँ खड़े होकर यह अनुभव सहज ही होता है कि प्रकृति केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन की आधारशिला है। हालाँकि, इस सौंदर्य और पवित्रता के संरक्षण की चुनौती भी हमारे सामने है। बढ़ती पर्यटक संख्या जहाँ स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए अवसर लेकर आती है, वहीं पर्यावरणीय दबाव भी बढ़ाती है। प्लास्टिक कचरा, अनियंत्रित निर्माण और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक उपयोग हिमालय की नाजुक पारिस्थितिकी के लिए गंभीर खतरा बन सकते हैं। इसलिए आवश्यक है कि युल्ला कांडा जैसे स्थलों की यात्रा केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि जिम्मेदारी और संवेदनशीलता के साथ की जाए।

यात्रा के अंत में जब लौटने का समय आया, तो ऐसा लगा मानो हिमालय अपने भीतर कुछ छोड़ जाने और कुछ साथ ले जाने की परंपरा निभा रहा हो। युल्ला कांडा से लौटते हुए केवल तस्वीरें ही साथ नहीं थीं, बल्कि प्रकृति के प्रति सम्मान, सांस्कृतिक विरासत के प्रति गर्व और जीवन को सरल दृष्टि से देखने की प्रेरणा भी साथ थी। युल्ला कांडा वास्तव में हिमालय की उस दिव्य चेतना का प्रतीक है जहाँ आस्था, प्रकृति और संस्कृति एक-दूसरे में समाहित होकर मानव जीवन को नई दिशा प्रदान करती हैं। यह यात्रा बताती है कि ऊँचाई केवल पर्वतों की नहीं होती, बल्कि विचारों, मूल्यों और अनुभूतियों की भी होती है।

प्रस्तुतिः श्रुति शर्मा (मौली)
काशीपुर

राज्यपाल ने किया श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संस्कृत पद्यानुवाद का विमोचन

राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से.नि.) ने 11 जुलाई को लोकभवन में 'आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' के संस्कृत पद्यानुवाद का विमोचन किया। 'आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' का संस्कृत में यह पहला संपूर्ण अनुवाद है,जिसे राम तीर्थ केंद्र और साहित्याचार्य जयनारायण शास्त्री द्वारा अनुवादित किया गया है। यह कार्यक्रम राम तीर्थ केंद्र (सहारनपुर) की स्वर्ण जयंती के अवसर पर आयोजित किया गया। इस अवसर पर राज्यपाल ने अपने संबोधन में कहा कि गुरुवाणी और देववाणी संस्कृत का यह दिव्य संगम भारत की सांस्कृतिक एकात्मता,आध्यात्मिक संवाद तथा सामाजिक समरसता का सशक्त प्रतीक है।

'आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' का संस्कृत पद्यानुवाद भारतीय ज्ञान–परंपरा, साहित्य और अध्यात्म के इतिहास में एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। साहित्याचार्य जयनारायण शास्त्री 'यात्री' जी की दशकों की तपस्या और विद्वता से इस अद्वितीय कृति का सृजन हुआ। दस्तावेजीकरण और प्रकाशन केवल अभिलेखन नहीं बल्कि सभ्यता की सामूहिक स्मृति के संरक्षण का कार्य है।

प्रस्तुति- अंकित तिवारी, उप सम्पादक

सफलता

करिअर गाइड डॉ. अफरोज इकबाल के मार्गदर्शन में निशांत मिश्रा बेसिक शिक्षा भर्ती परीक्षा में हुए चयनित

उत्तराखंड में सरकारी शिक्षक बनने के इच्छुक उम्मीदवारों के लिए करिअर गाइड डॉ.अफरोज इकबाल का मार्गदर्शन सफलता का मूलमंत्र बन रहा है। बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा प्राथमिक शिक्षक पद पर उनके मार्गदर्शन से निशांत मिश्रा का चयन हुआ है। निशांत अपनी इस कामयाबी में डॉ.अफरोज का बहुत बड़ा योगदान मानते हैं। निशांत बताते हैं कि सही मार्गदर्शन सफलता की यात्रा को बहुत आसान बना देता है। मुझे करिअर गाइड डॉ. अफरोज से लगातार मार्गदर्शन मिला,जिसने मेरी तैयारी को सही दिशा दी।

मेरी तैयारी में डॉ.अफरोज के यूट्यूब चैनल का महत्वपूर्ण योगदान रहा। मैंने उनके चैनल पर उपलब्ध शैक्षणिक वीडियो देखे,उनसे अपने नोट्स तैयार किये और विषयों को सरल तरीके से समझा। विशेष रूप से GK Basic Course मेरे लिए बहुत उपयोगी साबित हुआ। इस कोर्स ने सामान्य ज्ञान के अनेक महत्वपूर्ण विषयों को व्यवस्थित तरीके से समझने में मेरी मदद की। परीक्षा की

दृष्टि से जो बुनियादी अवधारणाएं आवश्यक होती हैं,उन्हें मजबूत करने में इस कोर्स का बड़ा योगदान रहा। निशांत मिश्रा की सफलता यह सिद्ध करती है कि सही मार्गदर्शन, निरंतर अभ्यास और अटूट आत्मविश्वास किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने की गारंटी है। साईं सृजन पटल की ओर से निशांत मिश्रा और उनके मार्गदर्शक करिअर गाइड डॉ. अफरोज इकबाल को अनेकानेक शुभकामनाएं।

उत्तराखंड की 'ढोली' को मिला राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार

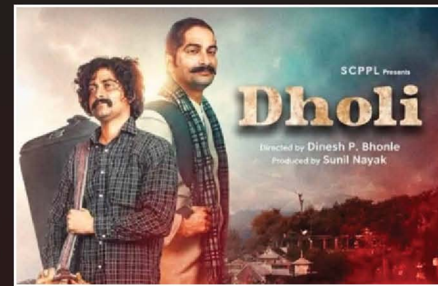

उत्तराखंडी सिनेमा के इतिहास में 18 जुलाई का दिन स्वर्णिम अध्याय बन गया। गढ़वाली फीचर फिल्म 'ढोली' ने 72 वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों में सर्वश्रेष्ठ उत्तराखंडी फिल्म पुरस्कार जीता है। राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार हेतु पहली बार उत्तराखंडी बोली – भाषा की पूरी लंबाई वाली फिल्म को इस पुरस्कार के लिए चुना गया है। इस फिल्म के निर्माता व निर्देशक दिनेश पी.भोंसले को रजत कमल और दो लाख रुपए की पुरस्कार राशि प्रदान की जायेगी। 'ढोली' फिल्म उत्तराखंड के वरिष्ठ साहित्यकार और संस्कृति कर्मी डॉ.नन्द किशोर हटवाल की चर्चित कहानी 'जमन दास ढोली' पर आधारित है। इस फिल्म की शूटिंग वर्ष 2023 में उत्तरकाशी जिले की असी गंगा घाटी के नाल्ड गांव और आसपास के क्षेत्रों में हुई थी। 'ढोली' फिल्म केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि उत्तराखंड की लोक संस्कृति,सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदनाओं का दस्तावेज है। इस फिल्म में उस समुदाय की पीड़ा को सामने लाया गया है, जिसे उत्तराखंड में ढोली,बाजगी,औजी और दास जैसे नामों से जाना जाता है। मांगलिक कार्य, कौथीग और धार्मिक अनुष्ठान में इनके द्वारा बजाये जाने वाले ढोल –दमाऊं की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। 'ढोली' को राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिलने पर उत्तराखंड के राज्यपाल और मुख्यमंत्री ने फिल्म की पूरी टीम को बधाई दी।

ईट राइट यूथ हैकाथॉन : युवाओं के नवाचार से स्वस्थ भारत की ओर एक सशक्त पहल

देहरादून में आयोजित 'ईट राइट यूथ हैकाथॉन 'उत्तराखंड 2026' ने यह साबित किया कि युवा केवल समस्याओं की पहचान ही नहीं, बल्कि उनके प्रभावी समाधान भी प्रस्तुत करने में सक्षम हैं। इस पहल का उद्देश्य युवाओं की रचनात्मक सोच और नवाचार क्षमता को समाजहित में उपयोग कर स्वस्थ और जागरूक भारत के निर्माण में योगदान देना है। लोकभवन, देहरादून में 4 जुलाई को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (सेनि.) ने कहा कि स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देने और समाज में जागरूकता लाने में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने ईट राइट यूथ हैकाथॉन को युवाओं की नवाचारी क्षमताओं को समाजहित में उपयोग करने का प्रभावी मंच बताया। राज्यस्तरीय इस प्रतियोगिता में उत्तराखंड के विभिन्न शिक्षण संस्थानों की 387 टीमों ने भाग लिया। तीन चरणों के बाद छह उत्कृष्ट टीमों का चयन किया गया।

प्रथम स्थान : एसजीआरआर पीजी कॉलेज, देहरादून की 'हिमसाथी इनोवेटर्स' टीम

- **द्वितीय स्थान : क्वांटम विवि, रुड़की की 'सीड बिड्स' टीम**
- **तृतीय स्थान 'वीर चंद्र सिंह गढ़वाली उत्तराखंड बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, भरसार की 'एकोनी इनोवेटर्स' टीम**

सांत्वना पुरस्कार डीबीएस पीजी कॉलेज, देहरादून की 'मैत्री पोषण' टीम, गवर्नमेंट नर्सिंग कॉलेज, हल्द्वानी की 'फूडिकेटिव' टीम तथा गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ नर्सिंग, सुरसिंगधार (नई टिहरी) की 'स्वास्थ्य हैकर्स' टीम को प्रदान किए गए। उच्च शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने बताया कि हैकाथॉन में 1,600 से अधिक विद्यार्थियों की भागीदारी इस बात का प्रमाण है कि राज्य का युवा स्वस्थ, सुरक्षित और टिकाऊ खाद्य प्रणाली के निर्माण के प्रति गंभीर और प्रतिबद्ध है।

प्रस्तुति : श्रीमती नीलम तलवाड़